

प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय
एक

प्रेरितों के काम की पुस्तक
की पृष्ठभूमि



THIRD MILLENNIUM
MINISTRIES

Biblical Education. For the World. For Free.

चलचित्र, अध्ययन मार्गदर्शिका एवं कई अन्य संसाधनों के लिये, हमारी वेबसाइट thirdmill.org पर जाएँ।

© थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ 2012 के द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस प्रकाशन के किसी भी भाग को प्रकाशक, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़, इनकोरपोरेशन, 316, लाइव ओक्स बुलेवार्ड, कैसलबरी, फ्लोरिडा 32707 की लिखित अनुमति के बिना समीक्षा, टिप्पणी, या अध्ययन के उद्देश्यों के लिए संक्षिप्त उद्धरणों के अतिरिक्त किसी भी रूप में या किसी भी तरह के लाभ के लिए पुनः प्रकशित नहीं किया जा सकता।

पवित्रशास्त्र के सभी उद्धरण बाइबल सोसाइटी ऑफ़ इंडिया की हिन्दी की पवित्र बाइबल से लिए गए हैं।
सर्वाधिकार © The Bible Society of India

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ की सेवकाई के विषय में

1997 में स्थापित, थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ एक लाभनिरपेक्ष सुसमाचारिक मसीही सेवकाई है जो पूरे संसार के लिए मुफ्त में बाइबल आधारित शिक्षा प्रदान करने के लिए प्रतिबद्ध है।

हमारा लक्ष्य संसारभर के हजारों पासवानों और मसीही अगुवों को मुफ्त में मसीही शिक्षा प्रदान करना है जिन्हें सेवकाई के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण प्राप्त नहीं हुआ है। हम इस लक्ष्य को अंग्रेजी, अरबी, मनडारिन, रूसी, और स्पैनिश भाषाओं में अद्वितीय मल्टीमीडिया सेमिनारी पाठ्यक्रम की रचना करने और उन्हें विश्व भर में वितरित करने के द्वारा पूरा कर रहे हैं। हमारे पाठ्यक्रम का अनुवाद सहभागी सेवकाइयों के द्वारा दर्जन भर से अधिक अन्य भाषाओं में भी किया जा रहा है। पाठ्यक्रम में ग्राफिक वीडियोस, लिखित निर्देश, और इंटरनेट संसाधन पाए जाते हैं। इसकी रचना ऐसे की गई है कि इसका प्रयोग ऑनलाइन और सामुदायिक अध्ययन दोनों संदर्भों में स्कूलों, समूहों, और व्यक्तिगत रूपों में किया जा सकता है।

वर्षों के प्रयासों से हमने अच्छी विषय-वस्तु और गुणवत्ता से परिपूर्ण पुरस्कार-प्राप्त मल्टीमीडिया अध्ययनों की रचना करने की बहुत ही किफ़ायती विधि को विकसित किया है। हमारे लेखक और संपादक धर्मवैज्ञानिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षक हैं, हमारे अनुवादक धर्मवैज्ञानिक रूप से दक्ष हैं और लक्ष्य-भाषाओं के मातृभाषी हैं, और हमारे अध्यायों में संसारभर के सैकड़ों सम्मानित सेमिनारी प्रोफ़ेसरों और पासवानों के गहन विचार शामिल हैं। इसके अतिरिक्त हमारे ग्राफिक डिजाइनर, चित्रकार, और प्रोड्यूसर्स अत्याधुनिक उपकरणों और तकनीकों का प्रयोग करने के द्वारा उत्पादन के उच्चतम स्तरों का पालन करते हैं।

अपने वितरण के लक्ष्यों को पूरा करने के लिए थर्ड मिलेनियम ने कलीसियाओं, सेमिनारियों, बाइबल स्कूलों, मिशनरियों, मसीही प्रसारकों, सेटलाइट टेलीविजन प्रदाताओं, और अन्य संगठनों के साथ रणनीतिक सहभागिताएँ स्थापित की हैं। इन संबंधों के फलस्वरूप स्थानीय अगुवों, पासवानों, और सेमिनारी विद्यार्थियों तक अनेक विडिओ अध्ययनों को पहुँचाया जा चुका है। हमारी वेबसाइट भी वितरण के माध्यम के रूप में कार्य करती है और हमारे अध्यायों के अतिरिक्त सामग्रियों को भी प्रदान करती है, जिसमें ऐसे निर्देश भी शामिल हैं कि अपने शिक्षण समुदाय को कैसे आरंभ किया जाए।

थर्ड मिलेनियम मिनिस्ट्रीज़ a 501(c)(3) कारपोरेशन के रूप में IRS के द्वारा मान्यता प्राप्त है। हम आर्थिक रूप से कलीसियाओं के टैक्स-डीडकटीबल योगदानों, संस्थानों, व्यापारों और लोगों पर आधारित हैं। हमारी सेवकाई के बारे में अधिक जानकारी के लिए और यह जानने के लिए कि आप किस प्रकार इसमें सहभागी हो सकते हैं, कृपया हमारी वेबसाइट <http://thirdmill.org> को देखें।

विषय-वस्तु

परिचय.....	1
लेखक	1
लूका का सुसमाचार	2
सुस्पष्ट	2
अस्पष्ट.....	3
आरम्भिक कलीसिया.....	4
पाण्डुलिपियाँ.....	4
आरम्भिक कलीसियाई अगुवे.....	5
नया नियम.....	6
लेखक के बारे में सुराग.....	6
लूका	7
ऐतिहासिक समयावधि	8
तिथि	8
70 ई. सन् के बाद.....	8
70 ई. सन् से पहिले	9
वास्तविक श्रोतागण.....	10
थियुफिलुस.....	10
विस्तृत श्रोतागण.....	11
सामाजिक संदर्भ	11
रोमी साम्राज्य.....	12
यहूदी.....	13
धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि	15
पुराना नियम	16
इतिहास	16
इसाएल.....	18
परमेश्वर का राज्य.....	20
यहूदी धर्मविज्ञान	21
यूहन्ना बपतिस्मादाता	21
मसीही धर्मविज्ञान	22
लूका का सुसमाचार	24
यीशु	24

प्रेरित	25
सारांश.....	27

प्रेरितों के काम की पुस्तक

अध्याय एक

प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि

परिचय

प्रसिद्ध जर्मन संगीतकार लुडविंग वान् बीथोवेन अभी भी अपने सुंदर और कलात्मक रचनाओं के लिए दुनिया भर में याद किये जाते हैं। परन्तु जितना अधिक उन्होंने स्वयं के संगीतमय के लिए अंकों को प्राप्त किया है, उससे कहीं ज्यादा प्रभावशाली उनके कार्य हैं। जब हम यह याद करते हैं कि बीथोवेन अपने लड़कपन से ही प्रगति करते हुए बहरेपन से दुख उठा रहे थे, तो सच्चाई तो यह है कि, इस बात की जानकारी हमें और भी ज्यादा आश्चर्यजनक होने का अनुभव कराती है कि बीथोवेन ने ऐसे समय में अपनी महान् कृतियों को लिखा जब वह पूरी तरह से बहरे हो गए थे। बीथोवेन के जीवन की पृष्ठभूमि को जानने के बाद उनका संगीत और अधिक प्रभावशाली बन जाता है।

कई महत्वपूर्ण तरीकों से, पवित्रशास्त्र की सराहना करना बीथोवेन की सराहना करने जैसा ही है। जिस शक्ति और स्पष्टता से बाइबल की विभिन्न पुस्तकें परमेश्वर के प्रकाशन की घोषणा करती हैं, उन्हें देखना मुश्किल नहीं है। परन्तु जब हम बाइबल के लेखकों की पृष्ठभूमि, उनके संसार, उनके जीवनों और उनके उद्देश्यों के बारे में जान जाते हैं, तो हमारी समझ और सराहना पवित्रशास्त्र के लिए और भी ज्यादा गहरी हो जाती है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक पर हमारी इस श्रृंखला का यह पहला अध्याय है। इस श्रृंखला में हम नए नियम की पाँचवीं पुस्तक का पता लगाएंगे, जिसे अक्सर प्रेरितों के काम या साधारणतया कार्य कह कर बुलाया जाता है। हमने इस अध्याय का शीर्षक "प्रेरितों के काम की पृष्ठभूमि," के रूप में दिया है और हम कई मौलिक विषयों पर अध्ययन करेंगे जो हमें इस पुस्तक की शिक्षाओं को अधिक गहराई और अधिक स्पष्ट रूप से समझने और इसकी सराहना करने में मदद करेंगे।

हमारा यह अध्याय प्रेरितों के काम की पुस्तक की पृष्ठभूमि के तीन महत्वपूर्ण पहलुओं को स्पर्श करेगा। सबसे पहले, हम पुस्तक के लेखक के रचयिता की जाँच करेंगे। दूसरा, हम इसकी ऐतिहासिक समयावधि को देखेंगे। और तीसरा, हम इसकी धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि का पता लगाएंगे। आइये लेखक के रचयिता पर देखने से आरम्भ करें।

लेखक

पवित्रशास्त्र की अन्य सभी पुस्तकों की तरह ही, प्रेरितों के काम की पुस्तक भी पवित्र आत्मा से प्रेरित थी। लेकिन इसकी दिव्य प्रेरणा हमारे द्वारा इसके मानवीय लेखकों के ऊपर हमारा ध्यान दिए जाने से कम नहीं होनी चाहिए। पवित्र आत्मा ने पवित्रशास्त्र के मौलिक लेखन को त्रुटि से मुक्त रखा, परन्तु उसने फिर भी मानव लेखकों के व्यक्तित्व, पृष्ठभूमि और इरादों को प्रयोग किया।

प्रेरितों के काम को पारम्परिक तौर पर लूका द्वारा लिखित माना जाता है, जो कि तीसरे सुसमाचार का लेखक है। परन्तु न तो तीसरा सुसमाचार और न ही प्रेरितों के काम की पुस्तक विशेष रूप से लेखक के नाम

का उल्लेख करती है। परिणाम स्वरूप, हमें उन कारणों पर ध्यान देते हुए पुष्टि करनी चाहिए जो लूका को इसके रचयिता होने के परम्परागत दृष्टिकोण को स्वीकार करते हैं।

हम प्रेरितों के काम के लेखक के रचयिता के तीन दृष्टिकोणों का पता लगाएंगे। सबसे पहले, हम लूका के सुसमाचार के साथ प्रेरितों के काम की तुलना करेंगे। दूसरा, हम लूका का इसके रचयिता होने के बारे में आरम्भिक कलीसियाई इतिहास और इसके गवाहों को लूका के विषय में जाँच करेंगे। और तीसरा, हम नए नियम के अन्य पहलुओं पर संक्षेप में देखेंगे जो इस बात का संकेत देते हैं कि लूका ने ही इन पुस्तकों को लिखा है। आइये सबसे पहले लूका के सुसमाचार की ओर मुड़ें और यह देखें कि इससे प्रेरितों के काम के रचयिता के बारे में क्या सिखने को मिलता है।

लूका का सुसमाचार

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक की तुलना तीसरे सुसमाचार से करते हैं, तो दो प्रकार की श्रेणी के प्रमाण दृढ़ता से एक व्यक्ति के द्वारा दोनों पुस्तकों के लिखे होने का सुझाव देते हुए उभरते हैं। एक तरफ तो, स्पष्ट सूचनायें सीधे ही जानकारी देती हैं जो कि इस दिशा की ओर संकेत करती हैं। दूसरी ओर, वहाँ पर अस्पष्ट प्रमाण भी हैं जो कि इसकी शैली और इन पुस्तकों की सामग्री में निहित है। आइये हम स्पष्ट प्रमाणों से आरम्भ करें जो यह संकेत देते हैं कि दोनों पुस्तकों का लेखक सामान्य तौर पर एक ही है।

सुस्पष्ट

प्रेरितों के काम 1:1 में, प्रेरितों के काम की पुस्तक की प्रस्तावना में, हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

हे थियुफिलुस, मैं ने अपनी पहली पुस्तिका उन सब बातों के विषय में लिखी जो यीशु आरम्भ से करता और सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 1:1)।

यहाँ लेखक "पहली पुस्तिका" के विषय में ऐसे कहता है, जिसका अर्थ यह है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक उसके लेखन श्रृंखला में की कम से कम दूसरी पुस्तक है। उसने यह भी संकेत किया कि उसने इस पुस्तक को थियुफिलुस नाम के व्यक्ति को लिखा है। अब इसके जैसी मिलती जुलती हुई प्रस्तावना को लूका 1:1-4 से सुनिए:

बहुतों ने इन बातों को जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है, जैसा कि उन्होंने जो पहले ही से इन बातों को देखने वाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुँचाया। इसलिए, हे श्रीमान् थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक-ठीक जाँच करके, उन्हें तेरे लिए क्रमानुसार लिखूँ, ताकि तू यह जान ले कि वे बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, अटल हैं (लूका 1:1-4)।

एक बार फिर से, यह संदर्भ एक ऐसे व्यक्ति की ओर संकेत करता है जिसका नाम थियुफिलुस है, परन्तु इसमें इससे पहले की पुस्तक का कोई उल्लेख नहीं किया गया है।

दोनों अर्थात्, प्रेरितों के काम और तीसरा सुसमाचार थियुफिलुस को समर्पित किए गए हैं, और प्रेरितों के काम की पुस्तक का संकेत 'पहली पुस्तिका' के तौर पर किया गया है। यह तथ्य दृढ़ प्रमाण को प्रस्तुत करते हैं कि इन पुस्तकों के लेखक ने कम से कम दो संस्करणों को, लूका के सुसमाचार को पहले संस्करण

के रूप में लिखते हुए और प्रेरितों के काम को दूसरे संस्करण के रूप में लिखते हुए लिखा। सच्चाई तो यह है कि, दो प्रस्तावनाओं के बीच का सम्बन्ध पुरातन साहित्यिक परम्परा को दर्शाता है जिसमें एक ही लेखक दो-संस्करणों के साहित्य को लिखता था। जोसेफुस ने, उदाहरण के तौर पर, अपने दो-संस्करण की साहित्यिक रचना अप्पीओन के विरुद्ध शीर्षक के नाम से लिखी, जिसके प्राक्कथन एक जैसे ही हैं।

इन स्पष्ट सम्पर्कों के अलावा, यहाँ पर प्रेरितों के काम और तीसरे सुसमाचार के मध्य में अस्पष्ट सहसम्बन्ध भी है जो इनके सामान्य तौर पर एक ही लेखक द्वारा रचित होने की ओर इंगित करता है। नय नियम के कई विद्वानों ने इन पुस्तकों के बीच की समानता की ओर संकेत किया है। समय हमें इनके बारे में संक्षिप्त उल्लेख करने की अनुमति देगा, परन्तु वह सामान्य तौर पर इन लेखकों के रचियता के बारे में महत्वपूर्ण अंतर्निहित प्रमाणों को प्रदान करते हैं।

अस्पष्ट

जैसा कि हमने अभी अभी देखा है, लूका 1: 1-4 यह कहता है कि लेखक ने विभिन्न स्रोतों की विविधता से जाँच की और थियुफिलुस के लिए क्रमानुसार लिखा हुआ समर्पित लेखन प्रस्तुत किया। यह हमारे लिए आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए कि कई विद्वानों ने इस बात पर ध्यान दिया है कि लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक अपनी संरचना और आकार में आपस में मिलते जुलते हैं। पुस्तकों के संयोजन की संरचना में कई समानताएं भी हैं। पुस्तकें एक प्रासंगिक शैली में आगे बढ़ती हैं, और दोनों मोटे तौर पर लगभग एक ही लंबाई की हैं, प्रत्येक एक ही मानक-आकार की पाण्डुलिपि को भरती हैं।

इस के अलावा, प्रत्येक पुस्तक में इसी तरह की एक कालानुक्रमिक लम्बाई है। दोनों अर्थात्, लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तकें मोटे तौर पर एक ही जितने वर्षों की समान संख्या को पूरा करते हैं। और दोनों ही पुस्तकों में समानान्तर विषय भी पाए जाते हैं। केवल एक उदाहरण के तौर पर, सुसमाचार यीशु की यात्रा का चरमोत्कर्ष उसकी गिरफ्तारी, मुकदमे, दुःखभोग, मृत्यु और यरुशलेम में उसके विजय प्रवेश, यहूदी धर्म की राजधानी और यहूदी राजतंत्रीय शक्ति के सिंहासन की ओर ले चलता है। और इसी के सामान्तर, प्रेरितों के काम की पुस्तक प्रेरित पौलुस की रोम की यात्रा, उसकी गिरफ्तारी से आरम्भ करके, उसके मुकदमे, उसकी पीड़ा और उस समय के संसार की साम्राज्यवादी शक्ति की राजधानी में मसीह के सुसमाचार के बारे में उसकी विजयी घोषणा के साथ समापन करते हुए अपने निष्कर्ष तक पहुँच जाती है।

इसके साथ ही, पुस्तक के बीच में समानताएं हैं क्योंकि वे एक ही कहानी के भाग हैं। हम इस तथ्य के बारे में सोच सकते हैं कि लूका के सुसमाचार में ऐसी अपेक्षाओं की गई हैं जो कि उस समय तक पूरी नहीं होती हैं जब तक कि प्रेरितों के काम की पुस्तक नहीं लिखी जाती है। उदाहरण के लिए, लूका के आरम्भ में ही, विश्वासयोग्य शिमोन यह घोषणा करता है कि यीशु अन्यजातियों के लिए एक प्रकाश होगा। लूका 2:30-32 में उसके शब्दों को सुनें:

क्योंकि मेरी आँखों ने तेरे उद्धार को देख लिया है। जिसे तू ने सब देशों के लोगों के सामने तैयार किया है। कि वह अन्य जातियों को प्रकाश देने के लिये ज्योति, और तेरे निज लोग इस्राएल की महिमा हो (लूका 2:30-32)।

लूका के सुसमाचार में यीशु की सेवकाई परमेश्वर के उद्धार और इस्राएल को दी हुई प्रतिज्ञा के बारे में उल्लेख करती है। परन्तु हम केवल प्रेरितों के काम में परमेश्वर के उद्धार को अन्यजातियों के लिए प्रकाशन के प्रकाश के रूप में सेवारत होते हुए कार्य करता हुआ देखते हैं। ये और अन्य समानताएं एक सामान्य छुटकारे से भरे-हुए-ऐतिहासिक दर्शन जो कि दो कार्यों के मध्य में है और उद्देश्य और विश्वास की एक संयुक्त भावना

की ओर संकेत करता है। और यह समानताएं यह भी सुझाव देती हैं कि हम एक ही लेखक के कार्यों को देख रहे हैं।

आरम्भिक कलीसिया

क्योंकि अब हमने प्रेरितों के काम और लूका के सुसमाचार के लेखन के रचयिता के बारे में कुछ सामान्य प्रमाणों को देख लिया है, इस लिए हम अब आरम्भ की कलीसिया के द्वारा प्रदान किये हुए प्रमाण की ओर ध्यान करने के लिए तैयार हैं। दूसरी से लेकर चौथी शताब्दी तक, आरम्भ की कलीसिया ने लूका के बारे में गवाही दी है, जो कि पौलुस के साथ सहयात्री था, वही दोनों अर्थात् प्रेरितों के काम और लूका के सुसमाचार का लेखक था। हम संक्षेप में दो तरीकों से इस प्रमाण की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम बाइबल के बारे में और इसके प्रारम्भिक लिखित पाण्डुलिपियों को देखेंगे। और दूसरा, हम यह देखेंगे कि आरम्भ की कलीसिया के अगुवों ने लूका के द्वारा लेखन किये जाने के बारे में क्या कहा। आइये, हम कुछ प्राचीन पाण्डुलिपियों के प्रमाण के साथ आरम्भ करते हैं।

पाण्डुलिपियाँ

एक सबसे पुरानी पाण्डुलिपि 'पपाईरस' के नाम से संदर्भित है, का मिस्र में 1952 में पता चला था। यह पपाईरस पर लिखा था। इसमें हमारे नए नियम के आरम्भ की प्राचीन पाण्डुलिपि के प्रमाण सम्मिलित किए गए हैं। इसकी शायद ई. सन् 175 और 200 के बीच के किसी समय में नकल की गई थी, और इसमें लूका के सुसमाचार और यूहन्ना के सुसमाचार के बड़े हिस्से को सम्मिलित किया गया है। दो सुसमाचारों के पठन सामग्री के बीच में, दो विषय-वस्तु के विवरणों को लिखा है। लूका के सुसमाचार के समापन के बाद, पाण्डुलिपि में यह शब्द आए हैं "इवाँजिलियोन काटा ल्योकॉन" या "लूका के सुसमाचार के अनुसार।" और इन शब्दों के तुरन्त बाद निम्नलिखित अभिव्यक्ति आती है "इवाँजिलियोन काटा अयोनाँन," या "यूहन्ना के सुसमाचार के अनुसार।" ये टिप्पणियाँ संकेत देती हैं कि जो सामग्री "लूका के सुसमाचार के अनुसार" के बाद आती है, उसकी पहचान लूका के सुसमाचार के लिए की गई है। पाण्डुलिपि का यह प्रमाण बहुत पहले से लिखा हुआ है और लूका ने तीसरा सुसमाचार लिखा। और इस विस्तार के द्वारा, यह भी लूका को ही प्रेरितों के काम के लेखक के रूप संकेत करता है।

दूसरा, 170 से 180 ई. सन् के आसपास, मारटोरियन के टुकड़े पाए जाते हैं, जो कि नए नियम की पुस्तकों के बारे में सूची देने वाले सबसे प्राचीन जानकारी वाले दस्तावेज हैं जिन्हें आरम्भ की कलीसिया ने मानक माना है। लूका के सुसमाचार के लिए लूका के द्वारा रचित होने की पुष्टि हो जाने के बाद, यह स्पष्ट रूप से संकेत करता है कि वही प्रेरितों के काम का भी लेखक है। इसकी पंक्तियों 34 से लेकर 36 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं कि:

इसके अलावा, सभी प्रेरितों के कार्य एक ही पुस्तक में लिखे गये थे... लूका ने उन व्यक्तिगत घटनाओं को संकलित किया जो उसकी उपस्थिति में घटित हुई थी।

यह वाक्य संकेत करता है कि दूसरी शताब्दी में, यह व्यापक तौर पर विश्वास किया जाता था कि लूका ही प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक था और उसने ही कुछ ऐसी घटनाओं की गवाही दी है जो कि इसमें वर्णित हैं।

तीसरा, तथाकथित मारसोनाईट विरोधी प्रस्तावना, जो कि 160 से लेकर 180 ई. सन्., के आसपास लिखा हुआ तीसरा सुसमाचार है, के एक परिचय में, लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक के बारे में इस तरह से वर्णन दिया गया है:

लूका, पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरित हो कर, इस पूरे सुसमाचार को संकलित करता है...और इसके बाद में यही लूका प्रेरितों के काम नामक पुस्तक को लिखता है।

इस आरम्भिक पाण्डुलिपि के अलावा, हमारे पास आरम्भ की कलीसिया के अगुवों की गवाही भी है जो यह संकेत करती है कि लूका ने ही तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा।

आरम्भिक कलीसियाई अगुवे

कलीसियाई धर्माचार्य इरानियुस, जो 130 से लेकर 202 ई. सन्., के आसपास रहा, यह विश्वास करता था कि लूका ही तीसरे सुसमाचार का लेखक था। उसने अपने साहित्यिक कार्य भ्रान्त शिक्षाओं के विरुद्ध, पुस्तक 3 खण्ड 1 में यह लिखा है कि:

लूका भी, जो पौलुस का सहकर्मी था, ने एक पुस्तक में उस द्वारा प्रचार किये हुए सुसमाचार को अभिलिखित किया है।

यहाँ पर इरानियुस का संकेत प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए है जो कि उस सुसमाचार को अभिलिखित करती है जिसका प्रचार पौलुस ने किया था। उसके शब्द महत्वपूर्ण हैं क्योंकि अच्छा ऐतिहासिक साक्ष्य यह संकेत देता है कि इरानियुस को प्रथम दृष्टि में ही लूका के प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक होने का ज्ञान था।

अलैक्जैन्ड्रिया का क्लेमेंट जो कि 150 से लेकर 150 ई. सन्., के आसपास रहा, ने ही लूका को ही प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा। उसने स्ट्रोमॉटा या विविध मामले नामक अपनी 5वीं पुस्तक के 12 वें अध्याय में इन शब्दों को लिखा है:

प्रेरितों के काम की पुस्तक में लूका ने पौलुस के सम्बन्ध में ऐसे कहा, हे एथेंस के लोगो, मैं देखता हूँ कि तुम हर बात में देवताओं के बड़े मानने वालो हो।

और तरतुलियन, जो कि 155 से लेकर 230 ई. सन्. में रहा, ने अपने साहित्यिक कार्य मारसियोन के विरुद्ध की पुस्तक 4 के अध्याय 2 में इन शब्दों को लिखा:

इसलिए, प्रेरित, यूहन्ना और मत्ती सबसे पहले हममें विश्वास को डालते हैं... लूका और मरकुस इसे बाद में नवीनीकृत करते हैं।

यहाँ, तरतुलियन विशेषकर लूका को ही तीसरे सुसमाचार को ही लेखक मानता है।

अन्त में, प्रसिद्ध कलीसियाई इतिहासकार ईसुबीयुस ने 323 ई. सन्., के आसपास अपने लेखन कलीसियाई इतिहास की पुस्तक 1 अध्याय 5 के खण्ड 3 में उल्लेख किया है कि लूका ही प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक है। वहाँ उसने क्या लिखा है इसे सुनिए:

लूका...ने प्रेरितों के काम में जनगणना के बारे में उल्लेख किया है।

इस प्रकार की सकारात्मक कथनों के साथ ही, यह आश्चर्यजनक है कि आरम्भ की कलीसिया के साहित्य में लूका को छोड़कर ऐसा एक भी संकेत नहीं मिलता है जिसमें जिसे लूका के सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक के लिए लेखन के लिए नामित किया गया हो, यद्यपि उसे कभी भी एक प्रेरित के रूप में मनोनित नहीं किया गया। परन्तु इस तरह के सुरागों के कारण, हमारे पास हर वह कारण है जिसमें हम यह विश्वास करें कि आरम्भ की कलीसिया ने लूका को ही इनका लेखक होने के लिए आविष्कृत नहीं किया, परन्तु इसकी बजाय जो कुछ उसने सच के रूप में प्राप्त किया था उसे ही केवल आगे पारित कर दिया: कि लूका ने इन दोनों पुस्तकों को लिखा।

नया नियम

अभी तक हमने यह देखा कि प्रेरितों के काम और तीसरे सुसमाचार को सामान्यतया एक ही लेखक के द्वारा लिखे जाने के अच्छे कारण हैं, और आरम्भ की कलीसिया ने इसके बारे में साक्षी दी है कि वह लेखक लूका ही था। अब आइए यह देखें कि हम लूका के स्वयं के बारे में नए नियम के अन्य भागों से किस तरह की सूचनाओं को प्राप्त करते हैं।

हम दो तरीकों से इस प्रमाण की जाँच करेंगे। सबसे पहले, हम हमारे गुमनाम लेखक के बारे में नए नियम से प्राप्त कुछ सुरागों पर ध्यान देंगे। और दूसरा, हम लूका के स्वयं के बारे में दी गई सूचनाओं के साथ इन सुरागों की तुलना करेंगे। आइये सबसे पहले हम हमारे लेखक के बारे में दिए गए सुरागों को देखते हैं।

लेखक के बारे में सुराग

जैसा कि हमने पहिले ही कहा कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक ने स्वयं के नाम से कोई पहचान नहीं कराई है। ऐसा आभास होता है कि, उसने अपने संरक्षक थियुफिलुस के कारण किसी भी तरह से नाम देने की आवश्यकता नहीं पड़ी। लूका 1:3 में वह बस ऐसे ही कहता है कि, "मुझे भी यह उचित मालूम हुआ," और प्रेरितों के काम की पुस्तक 1:1 में उसने ऐसे कहा कि, "मैंने पहली पुस्तिका... लिखी।" लेखक ने यह मान लिया है कि उसका संरक्षक यह जानता है कि वह कौन था। और जबकि इसने थियुफिलुस के लिए तो कोई समस्या उत्पन्न नहीं की, परन्तु इसने बहुत सारे प्रश्नों को आधुनिक पाठकों के लिए उत्पन्न कर दिया है।

उसी समय में, नए नियम में हमारे लेखक के बारे में कई बातों को बताया गया है सबसे पहले, वह प्रेरित नहीं था। सच्चाई तो यह है कि, ऐसा जान पड़ता है कि वह यीशु के स्वर्गारोहण होने के बाद विश्वास में आया था। लूका के सुसमाचार 1:1-2 में दिए गए विवरणों को सुनिए:

बहुतों ने उन बातों को जो हमारे बीच में बीती हैं, इतिहास लिखने में हाथ लगाया है।
जैसा कि उन्होंने जो पहिले ही से इन बातों के देखनेवाले और वचन के सेवक थे, हम तक पहुँचाया। (लूका1:1-2)

जब लेखक ने यह कहा कि यीशु के जीवन की घटनाएँ हम तक पहुँचीं, तो उसका संकेत यह है कि वह यीशु के जीवन का एक प्रत्यक्षदर्शी नहीं था।

दूसरा, प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका के सुसमाचार में यूनानी भाषा की लेखन शैली यह संकेत देती है कि लेखक अच्छी तरह से शिक्षित था। नए नियम की अनेक पुस्तकें यूनानी भाषा में सामान्यतया लिखी

गई हैं, यहाँ तक कि वे अपरिष्कृत यूनानी भाषा की शैली में लिखी गई हैं। परन्तु प्रेरितों के काम की पुस्तक और लूका के सुसमाचार की भाषा अपने प्रयोग में अधिक परिष्कृत शैली को दिखाती है।

तीसरा, प्रेरितों के काम की पुस्तक का अन्तिम आधा हिस्सा इंगित करता है कि इसका लेखक पौलुस के करीबी साथियों में से एक सहयात्री था। प्रेरितों के काम के आरम्भिक अध्यायों में, कहानी निरन्तर तृतीय पुरुषवाचक के रूप में आख्यान कर रही है। परन्तु प्रेरितों के काम अध्याय 16 में, कहानी अक्सर प्रथम-पुरुषवाचक के दृष्टिकोण का प्रयोग "हम" और "हमें" जैसे शब्दों का उपयोग करते हुए कर रही है। हम इस तरह की भाषा को प्रेरितों के काम 16:10-17; 20:5-15; 21:1-18; और 27:1-28:16 में पाते हैं। ये संदर्भ यह संकेत देते हैं कि लेखक ने बाद की मिशनरी यात्राओं में पौलुस के साथ यात्रा की और पौलुस के साथ कैसरिया से रोम की यात्रा में गया।

अब हमारे पास हमारे लेखक के बारे में कुछ सुराग हैं, हम ऐसी स्थिति में पहुँच चुके हैं जहाँ हम उन व्याख्याओं को देखेंगे जो कि लूका के बारे में जो कुछ हम जानते हैं, उससे मिलती जुलती हैं।

लूका

आइए हम उन बातों को एक बार पुनः देखें जिन्हें हम लूका और प्रेरितों के काम के लेखक के बारे में जानते हैं: वह एक प्रेरित नहीं था। ऐसा आभास होता है कि वह अच्छी तरह शिक्षित था। और वह पौलुस के साथ उसकी यात्रा में सहकर्मी था। इन वर्णनों को हम जो कुछ लूका के बारे में जानते हैं से कैसे तुलना कर सकते हैं?

ठीक है, सबसे पहिले, लूका एक प्रेरित नहीं था। प्रेरितों ने कलीसिया के लिए नींव की भूमिका को अदा करते हुए, मसीह के विशेषाधिकार को उसके बदले में प्रयोग करते हुए कलीसिया की स्थापना की और इसे किसी भी प्रकार की गलती और परेशानी से सुरक्षित किया। और प्रेरितों के काम 1:21-22 के अनुसार, प्रेरितों को यीशु ने स्वयं ही प्रशिक्षित किया था। परन्तु लूका ने यीशु के साथ कभी भी व्यक्तिगत तौर पर मुलाकात नहीं की थी और न ही इस तरह के अधिकार उसके पास होने का दावा किया था जो कि प्रेरितों से सम्बन्धित था। इसकी बजाय, वह तो पौलुस की मिशनरी यात्राओं में सहायता करने वाला एक सदस्य मात्र था। वह एक प्रेरितों का सेवक मात्र था, या जैसा कि पौलुस ने फिलेमोन के लिए आयत 24 में विवरण दिया है कि वह एक प्रेरितों का "सहकर्मी" था।

दूसरा, यह भी संभावना है कि लूका अच्छी तरह से शिक्षित था। हम इसका अनुमान कुलुस्सियों 4:14 से लगा सकते हैं, जहाँ पौलुस लूका की पहचान एक चिकित्सक के रूप में करता है। जबकि आज के दिनों की तरह दवाइयाँ नए नियम में औपचारिक रूप में एक प्रणाली के रूप में प्रयोग में नहीं लाई जाती थीं, इसके लिए एक व्यक्ति में कौशल और योग्यता का होना बहुत जरूरी था।

तीसरा, लूका पौलुस के साथ यात्रा करने वाला एक सहकर्मी था। प्रेरित पौलुस कुलुस्सियों 4:14; 2 तीमुथियुस 4:11; और फिलेमोन आयत 24 में उल्लेख करता है कि लूका उसके साथ यात्रा करता था।

हम प्रेरितों के काम के लेखक के विषय को इस तरह से सारांशित कर सकते हैं। विस्तृत मात्रा में ऐतिहासिक साक्ष्य यह इंगित करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक लूका ही है। आरम्भ की कलीसिया के साक्ष्य निरन्तर लूका को ही इसके लेखक होने का जिम्मेवार मानते हैं। और बाइबल का विवरण निरन्तर इसी विचार में बना हुआ है। इन प्रमाणों के प्रकाश में, हमारे पास वे सभी अच्छे कारण हैं कि हम यह विश्वास करें कि लूका ही दोनों अर्थात् तीसरे सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक का लेखक था। और हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि लूका के जिस विषय का विवरण दिया उसके लिए उसके पास उत्कृष्ट उपयोग और उससे उसका निकटता भरा हुआ सम्बन्ध था।

ऐतिहासिक समयावधि

अब क्योंकि हमने लूका के लेखक होने के बारे में देख लिया है, इस लिए हम प्रेरितों के कार्य की ऐतिहासिक समयावधि की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं। लूका ने किस समय इसे लिखा? और किनके लिए इस पुस्तक का संकलन किया गया?

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के ऐतिहासिक समयावधि की जाँच करते हैं, तो हम तीन विषयों को देखेंगे। पहला, हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के संकलन की तिथि पर, इस प्रश्न का उत्तर देते हुए खोज करेंगे कि कब लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा। दूसरा, हम इस पुस्तक के वास्तविक श्रोताओं की जाँच करेंगे। और तीसरा, हम इसके श्रोताओं के सामाजिक संदर्भ की खोजबीन करेंगे। इन विषयों को देखने से हमें इस बात को समझने में सहायता मिलेगी कि लूका के द्वारा लिखी हुई घटनाओं से उसका निकटता का सम्बन्ध था। यह हमें गहराई और विस्तृत तरीके से पहली शताब्दी में सुसमाचार के प्रभाव को समझने में भी सहायता करेगा। आइये इस पुस्तक के लेखन की तिथि से आरम्भ करें।

तिथि

यद्यपि इस बात पर कई तरह के विभिन्न विचार पाए जाते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक कब लिखी गई, परन्तु सामान्य अर्थों में, हम नए नियम के विद्वानों के विचारों को दो मौलिक अवलोकनों में विभाजित कर सकते हैं। एक तरफ तो, कुछ ने यह बहस की है कि लूका ने यरूशलेम के मन्दिर के विनाश के बाद में इसे 70 ई. सन्., में लिखा। और दूसरी तरफ, दूसरे यह बहस करते हैं कि उसने इसे 70 ई. सन्., में मन्दिर के नाश होने से पहले लिखा। 70 ई. सन्., की दुखान्त घटनायें यहूदी इतिहास के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण थीं, और इसी कारण यह इन घटनाओं के संदर्भ में इन विषयों पर विचार करने में सहायतापूर्ण हो जाती है। हम इनके प्रत्येक दृष्टिकोण को, लूका ने 70 ई. सन्., के बाद में लिखने की संभावना के साथ आरम्भ करेंगे।

70 ई. सन्. के बाद

वे विद्वान जो यह मानते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 70 ई. सन्., के बाद में लिखी गई अपने विचारों को कई तरह की सोच के ऊपर निर्धारित करते हैं। उदाहरण के लिए, कई यह दावा करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक में पाया जाने वाला आशावाद 80 से लेकर 90 ई. सन्., की तिथि की ओर इशारा करता है। इस दृष्टिकोण में, प्रेरितों के काम की पुस्तक बहुत ज्यादा आरम्भ की कलीसिया के इतिहास के बारे में सकारात्मक है जो कि बहुत पहले लिख दिया गया था। इसकी बजाय, यह आरम्भ की कलीसिया की घटनाओं पर उदासीनता भरी नजर है जो कि स्वयं को घटनाओं से कई वर्ष अलग होने की आवश्यकता को पाता है। परन्तु यह दृष्टिकोण उस शांत तरीके की उपेक्षा है जिसमें प्रेरितों के काम की पुस्तक कलीसिया के अंदर और बाहर की सभी तरह की समस्याओं का निपटारा करता है।

अधिकांश भाग के लिए, वे जो यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 70 ई. सन्., के बाद में लिखी गई ऐसा इसलिए करते हैं कि क्योंकि वे यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक की कुछ सामग्री यहूदी इतिहासकार जोसेफुस के लेखन के ऊपर आधारित है।

जोसेफुस के सम्बन्धित लेखन 79 ई. सन्., से पहिले संकलित किए गए थे, और 85 ई. सन्., से पहिले विस्तृत रूप में उपलब्ध नहीं हो सकते थे। इस लिए वे जो यह विश्वास करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक

जोसेफुस के साहित्य के ऊपर निर्भर करती है, वह यह सार निकालते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक 79 ई. सन्., से पहले नहीं लिखी गई और संभवतः 85 ई. सन्., के आसपास लिखी गई।

जो इस तरह की विचाराधारा की वकालत करते हैं उन्होंने प्रेरितों के काम और जोसेफुस द्वारा लिखित साहित्य के मध्य में कई सम्पर्कों की ओर संकेत किया है, हम उनमें से केवल चार सम्पर्कों को ही स्पर्श करेंगे जिनका उन्होंने उल्लेख किया है।

पहला, प्रेरितों के काम 5:36 में वर्णित थियूदास, एक यहूदी क्रान्तिकारी की ओर इशारा करता है जिसके बारे में जोसेफुस की ऐन्टीक्विटीस अर्थात् प्राचीन काल का इतिहास नामक 20 वीं पुस्तक के 97 वें खण्ड में गलील के यहूदा क्रान्तिकारी के तौर पर उल्लेख किया गया है, जो कि जोसेफुस की 2री पुस्तक यहूदी लड़ाइयों के 117 और 118वें खण्ड में और उसकी ऐन्टीक्विटीस अर्थात् प्राचीन काल का इतिहास नामक 18वीं पुस्तक के 1 से लेकर 8वें खण्ड में प्रकट होता है। तीसरा, प्रेरितों के काम 21:38 में बुलाया गया क्रान्तिकारी मिस्री जोसेफुस की यहूदी लड़ाइयों की 2री पुस्तक के खण्ड 261 से लेकर 263 में प्रकट होता है, और ऐन्टीक्विटीस अर्थात् प्राचीन काल का इतिहास नामक 20वीं पुस्तक के 171वें खण्ड में प्रकट होता है। और चौथा, कुछ अनुवादकों ने यह बहस की है कि प्रेरितों के काम 12:19-23 में हेरोदेस की मृत्यु का विवरण जोसेफुस की ऐन्टीक्विटीस अर्थात् प्राचीन काल का इतिहास नामक 19वीं पुस्तक के 343 से लेकर 352वें खण्ड में प्रकट होता है।

कुछ अनुवादकों की संख्या जो कि इस तरह के तर्कों की विचारधारा के पीछे चलते हैं का मानना यह है कि इसके बावजूद, हमें इस बात की ओर संकेत करना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और जोसेफुस का लेखन के सामान्तर अंश यह प्रमाणित नहीं करते हैं कि प्रेरितों के काम की पुस्तक जोसेफुस के साहित्य के ऊपर निर्भर थी। सच्चाई तो यह है कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक में दी हुई घटनाओं के वर्णन जोसेफुस के विवरणों के भिन्न है। इस लिए, ऐसा जान पड़ता है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक और जोसेफुस साधारणतया अलग अलग या एक ही सामान्य स्रोत पर निर्भर रहते हुए जाने-पहचाने प्रसिद्ध ऐतिहासिक घटनाओं का वर्णन करते हैं। क्योंकि उल्लिखित लोग जाने-पहचाने सम्बन्धित प्रसिद्ध ऐतिहासिक लोग हैं, इस लिए यह आश्चर्य नहीं होना चाहिए कि उन्हें एक से ज्यादा इतिहासक साहित्य में स्मरण किया गया है। और इससे भी ज्यादा, थियूदास की घटना में हम एक बहुत ही ज्यादा साधारण से नाम के साथ निपटारा कर रहे हैं। यह भी सम्भव है कि ये दो भिन्न व्यक्ति एक ही नाम से प्रचलित हो।

70 ई. सन् से पहिले

प्रेरितों के काम की पुस्तक की तिथि पर दूसरा प्रमुख दृष्टिकोण यह है कि इसे 70 ई. सन्., में मंदिर के विनाश से पहले लिखा गया। इस पहले लिखे जाने की तिथि के पक्ष में कई प्रमाण हैं, परन्तु हमारे उद्देश्य की प्राप्ति के लिए हम प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्तिम दृश्य पर अपना ध्यान केन्द्रित करते हुए अपने सारांश को प्राप्त करेंगे।

सुनिए प्रेरितों के काम की पुस्तक 28:30-31 में लिखी हुई अन्तिम दो आयतों को। वहाँ पर लूका ने पौलुस के इन शब्दों को लिखा है:

वह पूरे दो वर्ष अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सबसे मिलता रहा और बिना रोट-टोक के बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु मसीह की बातें सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 28:30-31)।

प्रेरितों के काम की पुस्तक पौलुस के घर के अन्दर रोम में कैद होने के साथ बन्द होती है, जो कि वहाँ पर मसीह के सुसमचार की घोषणा बहुत ही हियाव से कर रहा है। यह अन्त इस महत्वपूर्ण विश्वास का साक्ष्य है कि प्रेरितों के काम 70 ई. सन्., से पहले लिखी गई।

पहला, लूका का पौलुस की सेवकाई के बारे में विवरण एक महत्वपूर्ण घटना के साथ रूक जाता है जो कि 64 ई. सन्., में घटित हुई। 64 ई. सन्., में सम्राट नीरो ने मसीहियों पर रोम में आग लगा देने का दोष लगा दिया था और मसीहियों को सताना आरम्भ किया था। यह आश्चर्य की बात होगी कि लूका इतनी बड़ी घटना का उल्लेख नहीं करे यदि यह उसके जीवन काल में ही घटित हुई हो तब जबकि प्रेरितों के काम की पुस्तक लिख ली गई हो।

दूसरा, पौलुस के बारे में सोचा जाता है कि वे सम्राट नीरो के द्वारा कलीसिया पर लाए गए सताव के कारण शहीद हुआ था, संभावित 65 ई. सन्., में या उसके कुछ देर बाद में। यदि प्रेरितों के काम की पुस्तक इससे पहिले लिख ली गई थी, तो यह लगभग निश्चित है कि यह पौलुस की शहादत के बारे में अवश्य उल्लेख करती, क्योंकि वो इस पुस्तक का एक सबसे अत्यन्त महत्वपूर्ण चरित्र है।

तीसरा, जब यहूदी मन्दिर को यरूशलेम में 70 ई. सन्., में नाश किया गया था, तो उसने यहूदियों और कलीसिया में आए हुए अन्यजातियों के बीच के सम्बन्धों पर गहरा प्रभाव डाला था। प्रेरितों के काम की पुस्तक कई स्थानों पर इन सम्बन्धों के बारे में ध्यान आकर्षित करती है। इस लिए, यह संभावना अत्यन्त कम है कि प्रेरितों के काम की पुस्तक मंदिर के विनाश की घटना को छोड़ देती यदि यह उसके समय में घटित हो जाती।

इस तरह के तथ्यों के प्रकाश में, यह सार सबसे उत्तम है कि लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को पौलुस की बन्दीगृह में और रोम में उसकी सेवकाई जो कि 60 से लेकर 62 ई. सन्., में रही थी, जो इस पुस्तक का अन्तिम ऐतिहासिक विवरण है, में लिखा था।

वास्तविक श्रोतागण

प्रेरितों के काम की पुस्तक की इस आरम्भिक तिथि की इस समझ को ध्यान में रखते हुए, हमें अब प्रेरितों के काम की पुस्तक की ऐतिहासिक समयावधि की दूसरी विशेषता की ओर मुड़ना चाहिए: जो कि लूका के लेखन के वास्तविक श्रोतागण हैं। जिन श्रोतागणों की जागरूकता को लूका चाहता था कि उसकी पहुँच लूका के द्वारा लिखित साहित्य प्रेरितों के काम की पुस्तक को समझने के लिए महत्वपूर्ण है।

हम प्रेरितों के काम की पुस्तक के वास्तविक श्रोतागणों के दो तरीकों से खोजबीन करेंगे। पहला, हम थियुफिलुस को लिखे गये स्पष्ट समर्पण को देखेंगे। और दूसरा, हम इस संभावना को देखेंगे कि यह पुस्तक विस्तृत श्रोतागणों तक पहुँचने की चाहत से लिखी गई थी। आइए, हम लूका के सबसे पहले पाठक थियुफिलुस के साथ आरम्भ करें।

थियुफिलुस

लूका अपनी प्रस्तावना में थियुफिलुस जो कि उसका संरक्षक है, वह जिसने उसके लिखने के लिए अधिकृत किया था, को समाविष्ट करता है। जैसा कि हमने, लूका 1:3 और प्रेरितों के काम 1:1 में देखा, लूका ने उसके कार्य को थियुफिलुस को समर्पित किया। इससे आगे, लूका 1:3 में, लूका ने थियुफिलुस को हे श्रीमान् थियुफिलुस कह कर पुकारा है। लूका ने इन शब्दों "हे श्रीमान्" (या यूनानी में कारटिस्टोस) को सम्मान के लिए

अभिव्यक्त किया है। इस शब्दावली ने बहुतों को यह विश्वास करने में मजबूर कर दिया है कि थियुफिलुस एक बहुत ही ज्यादा धनवान संरक्षक था।

परन्तु लूका और थियुफिलुस के बीच के सम्बन्ध मात्र संरक्षण की तुलना में अधिक जटिल था। लूका और प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ने के बाद, थियुफिलुस लूका का विद्यार्थी बन गया। हम इसे लूका के सुसमाचार की प्रस्तावना में लूका के थियुफिलुस के साथ सम्बन्धों के इस पहलू को देख सकते हैं।

लूका 1:3-4 में हम इन शब्दों को पढ़ते हैं कि:

इसलिये हे श्रीमान थियुफिलुस मुझे भी यह उचित मालूम हुआ कि उन सब बातों का सम्पूर्ण हाल आरम्भ से ठीक ठीक जाँच करके उन्हें तेरे लिये क्रमानुसार लिखूँ। कि तू यह जान ले, कि ये बातें जिनकी तू ने शिक्षा पाई है, कैसी अटल हैं (लूका 1:3-4)।

जैसा कि यह संदर्भ संकेत करता है, लूका की पुस्तक हिस्सों में रूपरेखित हुई थी ताकि थियुफिलुस बातों की निश्चितता के बारे में जान सके जैसी उसे सिखाई गई थी। सामान्य तौर पर कहना, लूका ने इन्हें थियुफिलुस को निर्देश देने के लिए लिखा।

लूका के द्वारा थियुफिलुस को उसका पहला पाठक होने के बारे में स्पष्ट तौर पर देख लेने के बाद, यह हमारे लिए सोचना अत्यन्त सहायक होगा कि लूका के विस्तृत अर्थों में वास्तविक श्रोता कौन थे।

विस्तृत श्रोतागण

नए नियम में किसी अन्य स्थान पर जो हम पढ़ते हैं, उससे यह जानना कठिन नहीं है कि पहली शताब्दी में विस्तृत तौर पर कलीसिया कई विषयों पर संघर्ष कर रही थी जिन्हें लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में उल्लिखित किया है। लूका का इतिहास यहूदियों और अन्यजाति विश्वासियों में झगड़े, और उनके बीच के विभाजन को जो कि विभिन्न तरह के प्रेरितों और शिक्षकों के ऊपर आधारित था, का उल्लेख करता है। उसका विवरण धर्मसिद्धान्तों की गलतियों को स्पर्श करता है जिन्हें झूठे शिक्षकों ने परिचित कराया था। प्रेरितों के काम की पुस्तक कलीसिया और दिवानी सरकार के बीच में चल रहे झगड़े के बारे में भी सूचित करता है। यह स्त्रियों और गरीबों के द्वारा सामना किए जा रहे विषयों पर भी ध्यान आकर्षित करता है। इसमें सतावों, दुखों और बन्दीगृह में डाल दिए जाने का भी विवरण है। प्रेरितों के काम की पुस्तक इस तरह के धर्म सिद्धान्तों, नैतिक और व्यावहारिक कठिनाइयों को भी स्पर्श करता है क्योंकि विस्तृत कलीसिया ने इन विभिन्न विषयों को आरम्भ के दशकों में ही संघर्ष किया।

क्योंकि लूका ने इन विषयों को विस्तृत रूप से संबोधित करने के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा, इस लिए यह अनुमान लगाना सही होगा कि उसका इरादा कई भिन्न विश्वासियों द्वारा इसे पढ़े जाने का रहा था। उसे चिंता यह थी कि वह दोनों अर्थात् थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया में आई हुई कई चुनौतियाँ जिनका वे सामना कर रहे थे, में सहायता दे।

सामाजिक संदर्भ

प्रेरितों के काम की पुस्तक की तिथि और वास्तविक श्रोताओं पर ध्यान दे लेने के बाद, हम अब इस बात को सम्बोधित करने के लिए तैयार हैं: जो कि लूका के कार्य का सामान्य सामाजिक संदर्भ है, ऐसा संसार जिसमें प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिखा गया। जितना अधिक हम लूका के दिनों की सामाजिक शक्तियों

के बारे में समझेंगे, उतना ज्यादा उत्तम तरीके से हम इस पुस्तक की कई बातों को आत्मसात् करने के लिए सुसज्जित हो जाएंगे।

हम पहली शताब्दी की कलीसिया के जीवन के दो केन्द्रीय गुणों को देखते हुए प्रेरितों के काम की पुस्तक के सामाजिक संदर्भ की खोजबीन करेंगे: पहला, रोमी साम्राज्य का शासन और शक्ति; और दूसरा, कलीसिया और यहूदियों के बीच नया सम्बन्ध। आइये सबसे पहले रोमी साम्राज्य को देखें।

रोमी साम्राज्य

जब तक लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिख लिया था, उस समय तक रोमी साम्राज्य ने पूरे भूमध्य संसार पर विजय प्राप्त कर इसे अपने नियंत्रण में कर लिया था, और इसने अपने साम्राज्य को वर्तमान के ब्रिटेन, उत्तरी अफ्रीका और एशिया के कुछ भागों तक विस्तार कर लिया था। आरम्भ की कलीसिया के दिनों में, साम्राज्य अभी भी विस्तार कर रहा था, जिसमें अधिक से अधिक लोग और क्षेत्र इसके राज्य में जुड़ते जा रहे थे। ऐसा इसलिए था, क्योंकि रोमी साम्राज्य ने समाज के सभी पहलुओं को अपने विशिष्ट रोमी मूल्यों, लक्ष्यों और विश्वास के साथ गहराई से प्रभावित किया।

बिना किसी शक के, जीते हुए प्रदेशों के ऊपर रोमी साम्राज्य के सबसे बड़े प्रभाव राजनीतिक और आर्थिक थे। रोमी साम्राज्य की प्रमुख राजनीतिक दिलचस्पियों में एक मुख्य साम्राज्य के भीतर शांति और विश्वासयोग्यता को सुनिश्चित करने के लिए स्थानीय अधिकारियों के ऊपर शक्तिशाली नियंत्रण करना था।

विजयी प्राप्त राष्ट्रों को कुछ सीमा तक स्थानीय स्वायत्तता प्रदान की गई थी, परन्तु उनके स्थानीय अधिकारियों को अक्सर बदल दिया जाता था और वे सदैव रोमी साम्राज्य के पदानुक्रम के अधीन रहते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम की पुस्तक कैसरिया दो रोमी राज्यपालों अर्थात् फेलिक्स और फेस्तुस के बारे में उल्लेख करती है, जिन्होंने यहूदिया की सारी भूमि पर कैसरिया से शासन किया। कर लेने के कार्य को देखने के अलावा, वे रोमी साम्राज्य के अपने हिस्से में शान्ति और व्यवस्था बनाए रखने के लिए भी जिम्मेदार थे।

साम्राज्य ने भी विजय प्राप्त देशों की जनसंख्या में रोमन नागरिकों के एकीकरण के माध्यम से सांस्कृतिक और राजनीतिक प्रभाव का प्रयोग किया।

अक्सर, रोमी साम्राज्य ने नए विजय प्राप्त किए हुए प्रदेशों में सेवानिवृत्त हो रहे सैन्य बल को रहने के लिए प्रदान किये। इस अभ्यास के द्वारा विश्वासयोग्य रोमी नागरिकों के माध्यम से पूरे के पूरे साम्राज्य में रोमी परिक्षेत्र स्थापित हो गए, और इन्होंने दोनों अर्थात् सरकारी और सामाजिक ढाँचे में रोमी मूल्यों और प्रतिबद्धताओं को बढ़ावा दिया। यही कारण है कि, प्रेरितों के काम की पुस्तक समय समय पर रोम के लोगों का उल्लेख करती है। जिसे हम पिन्तेकुस्त के दिन के आरम्भ में ही, प्रेरितों के काम 2:10-11 में पढ़ते हैं, कि वहाँ पर "रोम से आए हुए लोग थे (दोनों अर्थात् यहूदी और यहूदी धर्म में धर्मान्तरित)।" एक बार फिर, कुरनेलियुस, जो कि प्रेरितों के काम 10 अध्याय में परमेश्वर-से-डरने वाला एक सूबेदार था, प्रेरितों के काम में सुसमाचार को फैलाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करता है।

इस के अलावा, स्थानीय संस्कृतियाँ, रोम के लोक निर्माण, जैसे कि सड़कों, विस्तृत इमारतों और सार्वजनिक बैठकों के स्थानों से प्रभावित थे। पौलुस और अन्य जिन्होंने उसके साथ मिशनरी यात्राओं में प्रयास किए इन्होंने रोमी शासन के इस पहलू की व्याख्या की है। प्रेरितों ने इन सार्वजनिक स्थानों का प्रयोग सुसमाचार का प्रचार करने के लिए किया, जब वे यात्रा करते हुए एक स्थान से दूसरे स्थान पर कूच करते थे।

शायद रोमी साम्राज्य की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता आरम्भ की कलीसिया के लिए विजय प्राप्त लोगों के धर्मों के ऊपर इसका प्रभाव था।

लूका के लेखन के समय में, एक व्यक्ति पूरे रोमन साम्राज्य के केन्द्र में खड़ा था: वह कैसर था। सम्राट का कैसर को न केवल उसके लोगों और क्षेत्र के ऊपर देवता के रूप में देखा जाता था बल्कि लोगों के लिए सोटेर या उद्धारक के रूप में भी देखा जाता था। कैसर उसके लोगों को अराजकताओं और अन्धकारों में से बाहर निकालता था। रोमी प्रचार के अनुसार, कैसर अराजकता और अंधकार से अपने लोगों को छुटकारा देता था। और रोमन साम्राज्य को स्थानीय राजाओं के अत्याचार से लोगों को मुक्त कराने के लिए और प्रत्येक को रोम के उदार नियम के अधीन लाने के द्वारा अपने उद्धार को विस्तार किए जाने के रूप में प्रस्तुत किया गया था।

बहुत सारे स्थानों में, विजयी लोगों को उनकी धार्मिक प्रथाओं को पालन करते रहने की अनुमति दी गई थी, परन्तु उन्हें कैसर और पारम्परिक रोमी देवताओं की श्रेष्ठता को भी स्वीकार करना आवश्यक था। अब, कई तरह से, पहली शताब्दी में यहूदी और मसीही विश्वासी रोम के सबसे सम्मानजनक नागरिक थे, परन्तु विश्वासयोग्य यहूदियों और मसीही विश्वासियों ने रोमी धर्म की सर्वोच्चता को स्वीकार करने से इनकार कर दिया था। रोमी साम्राज्य ने यहूदी धर्म को लिजियो लिक्टिका या कानूनी धर्म के रूप में नामित किया, और जहाँ तक संभव हो मसीही विश्वास को सहन किया – यद्यपि इसने फिर भी दोनों समूहों के लोगों को दमित किया।

सरकार, जनसंख्या, लोक निर्माण और धर्म के अपने नियंत्रण के माध्यम से, रोम ने हर स्थान पर अपने प्रभाव का प्रसार करने का जहाँ तक संभव था, प्रयास किया।

अब क्योंकि हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक के सामाजिक संदर्भ को रोमी साम्राज्य के प्रभाव के प्रकाश में देख लिया है, इस लिए अब हम उस सामाजिक स्थिति के एक और महत्वपूर्ण आयाम की जांच के लिए तैयार हैं जिसमें लूका ने इसे लिखा: अविश्वासी यहूदियों और आरम्भिक मसीही विश्वासियों में बीच का सम्बन्ध।

यहूदी

हम पहले यहूदियों और आरम्भ की कलीसिया दोनों के बीच के सम्बन्ध को उनके बीच में घनिष्ठ संबंध पर, और दूसरा उनके बुनियादी मतभेद की खोजबीन करते हुए ध्यान देते हुए विचार करेंगे। आइये इन दो समूहों के बीच आपसी सम्पर्कों के साथ आरम्भ करते हैं।

आरम्भ की कलीसिया ने यहूदी लोगों के साथ एक विरासत को साझा किया। जैसा कि स्पष्ट है, आधुनिक संसार में हमें अक्सर स्वयं को स्मरण दिलाना होता है कि यीशु यहूदी था, सभी प्रेरित यहूदी थे, और सबसे पहले, कलीसिया स्वयं लगभग पूरी तरह से यहूदियों से धर्मान्तरित हुए लोगों से भरी हुई थी। इस कारण, यह आश्चर्यजनक बात नहीं है कि आरम्भ की कलीसिया के मन में प्रतिज्ञात् यहूदी मसीह के प्रति विश्वासयोग्यता यहूदीवाद की इसी एक निश्चित सच्चाई में निहित थी।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, आरम्भ की कलीसिया में से कई लोग मंदिर में आराधना सभा में भाग लेते थे, पवित्रशास्त्र सुनने के लिए यहूदी सभाघरों में मुलाकात करते थे, और कई यहूदी यहूदी प्रथाओं को बनाए रखने के लिए सराहना को प्राप्त किया करते थे। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 13:32-33 में पौलुस के शब्दों को सुनिए:

और हम तुम्हें उस प्रतिज्ञा के विषय में, जो बापदादों से की गई थी, यह सुसमाचार सुनाते हैं (प्रेरितों के काम 13:32-33)।

पौलुस और अन्य जो उसके साथ यात्रा कर रहे थे ने स्वयं की पहचान यहूदी सभाघरों में मिलने वाले यहूदियों से हमारे पूर्वजों को "हमारे पिता" कह कर और हम विश्वासियों को उनकी सन्तान कह कर की है।

इसके अतिरिक्त, आरम्भ की कलीसिया और यहूदी समाज बड़े पैमाने पर एक ही पवित्रशास्त्र के प्रति प्रतिबद्ध थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, मसीह विश्वासी निरन्तर पवित्रशास्त्र का उपयोग करते रहे हैं जब भी वे यहूदी संदर्भों में सुसमाचार का प्रचार करते थे।

प्रेरितों के काम 17:1-3 में विवरण दिया गया है कि पौलुस ने पवित्रशास्त्र को उस समय खोला जब वे यहूदियों को मसीह के बारे में प्रचार कर रहा था। यहाँ पर लूका के शब्दों को सुनिए:

फिर वे अम्फिपुलिस और अपुल्लोनिया होकर थिस्सलुनीके में आए, जहाँ यहूदियों का एक आराधनालय था। और पौलुस अपनी रीति के अनुसार उन के पास गया, और तीन सब्त के दिन पवित्र शास्त्रों से उन के साथ विवाद किया। और उन का अर्थ खोल खोलकर समझाता था, कि मसीह का दुख उठाना, और मरे हुओं में से जी उठाना, अवश्य था; (प्रेरितों के काम 17:1-3)।

इस के अलावा, मसीहियत और यहूदी धर्म के बीच घनिष्ठ सम्बन्ध यहूदी अधिकारियों और आरम्भ की कलीसिया के बीच आपस में महत्वपूर्ण तरीके से पारस्परिक क्रियाओं के द्वारा हुआ।

प्रेरितों के काम की पुस्तक के अनुसार, आरम्भ की कलीसिया ने मसीह के सुसमाचार प्रचार की घोषणा बहुत अधिक साहस के साथ किया जिसने अक्सर उन्हें यहूदी अधिकारियों के साथ संघर्ष करने में नेतृत्व दिया। परन्तु जितना अधिक सम्भव हो सके, आरम्भ के मसीही विश्वासियों ने यहूदी नेताओं को स्वीकार किया और उनका विरोध केवल उसी समय किया जब वे उन्हें परमेश्वर के आदेशों की अवज्ञा करने के लिए उन्हें आदेश देते थे।

यहूदी लोगों और आरम्भ की कलीसिया के बीच घनिष्ठ सम्बन्धों के होने के बावजूद, वे अभी भी बुनियादी मतभेदों के कारण वे अलग पहचाने जाते थे।

सबसे पहले और सबसे मौलिक, मसीही विश्वासी और अविश्वासी यहूदी यीशु के व्यक्तित्व और उसके कार्यों पर असहमत थे। कलीसिया ने घोषणा की कि यीशु ही मसीह था जिसने मृत्यु पर विजय प्राप्त की थी, और सारी सृष्टि को पुनः बहाल किया और मृतकों में से अपने ही जी उठने के साथ मृतकोत्थान को आरम्भ किया था। परन्तु अविश्वासी यहूदियों ने यह माना कि एक अपराधी के रूप में क्रूस पर चढ़ाये गए व्यक्ति के लिए प्रतिज्ञात् मसीह होना असम्भव था। इस भिन्नता ने मसीह विश्वासियों और अविश्वासियों में दरार को उत्पन्न कर दिया जो कि आज के दिन तक निरन्तर बनी हुई है।

दूसरा, जबकि आरम्भ की कलीसिया और यहूदी अगुवों ने इब्रानी बाइबल के अधिकार के ऊपर सहमति व्यक्त की है, जबकि वे विशेष रूप से यीशु के सम्बन्ध में, इब्रानी पवित्रशास्त्रों की सही व्याख्या पर कठोरता के साथ असहमत हैं। आरम्भ की कलीसिया ने विश्वास किया कि इब्रानी पवित्रशास्त्रों में आने वाले मसीह के लिए की गई आशा यीशु में पूरी हो गई है, परन्तु अविश्वासी यहूदियों ने इस समझ को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। यहूदी धर्म के भीतर ही कई सम्प्रदाय थे जो कई तरह के विचारों की विस्तृत श्रृंखला को मानते थे, परन्तु उनमें से अधिकांश के लिए यह स्वीकार करना असम्भव था कि यीशु पुराने नियम के प्रतिज्ञात् मुक्तिदाता की आशाओं को पूरा करता है।

तीसरे स्थान पर, पहली शताब्दी की आरम्भ की कलीसिया और यहूदी लोग इस बात में मतभेद रखते थे कि उनका अन्यजातियों के प्रति कैसा दृष्टिकोण था। अधिकांश भाग के लिए, चौकस यहूदियों ने

अन्यजातियों के साथ किसी तरह का कोई साझा नहीं किया। परन्तु दूसरी ओर, कई खतनारहित अन्यजाति यहूदी धर्म के नैतिक शिक्षा और मान्यताओं की ओर इतना ज्यादा आकर्षित थे कि वे स्थानीय यहूदी सभाओं में स्वयं को संलग्न और परमेश्वर से डरने वालों के रूप में जाने जाते थे। परमेश्वर से डरने वाले को अन्य अन्यजातियों से ज्यादा सम्मान प्राप्त था, परन्तु वे यहूदी समुदाय के पूर्ण सदस्य नहीं थे। अन्यजाति व्यक्ति यहूदी धर्म में धर्मान्तरित हुए थे जिसमें दीक्षा संस्कार में से जाने के बाद, बपतिस्मा और खतना और यहूदी परम्पराओं का पालन करना भी निहित था।

जबकि आरम्भ की कलीसिया के विश्वासियों ने अन्यजातियों के प्रति इस समय से आरम्भ किया, परन्तु वे धीरे धीरे इस समझ को प्राप्त कर गए कि अन्यजाति जो मसीह के पीछे चल रहे हैं, को भी कलीसिया में पूर्ण सदस्यता का दर्जा प्रदान किया जाना चाहिए। पवित्र आत्मा के इस नए प्रकाश में, आरम्भ की कलीसिया ने यह निर्धारित किया कि मसीह में विश्वास व्यक्त करना और बपतिस्मा लेना ही मसीही कलीसिया में पूर्ण सदस्यता के लिए पर्याप्त था। इस कारण, प्रेरितों ने उनके कार्यों में मसीह को सार्वभौमिक स्वामी दोनों अर्थात् यहूदियों और अन्यजातियों में सुसमाचार प्रचार करने के लिए अभ्यास को जैसे जैसे कलीसिया बढ़ती गई उसमें दोनों लोगों के वरदानों और सेवकाई को स्वीकार करने के द्वारा लाया। वे समझ गए कि परमेश्वर अन्यजातियों को राज्य की आशा को पूरी करने के लिए प्रयोग कर रहा है जो कि उसने पुराने नियम में उसके लोगों के ऊपर विस्तारित किया था। इसमें कोई आश्चर्य नहीं है कि इसके कारण अविश्वासी यहूदियों और आरम्भ के मसीह विश्वासियों के बीच कई तरह के संघर्ष को आने में नेतृत्व मिला।

प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन जिस रूप में लूका ने इसे लिखा है, इसके समय के बारे में कुछ जानकारी जानने के बाद, उन श्रोताओं को जिन्हें उसने लिखा और इसके सामाजिक संदर्भ को जिसमें उसने लिखा हमारी बहुत ज्यादा सहायता करता जब हम इसको पढ़ते हैं। हम उन समस्याओं की सराहना करने के लिए, जिन्हें लूका ने सम्बोधित किया है, उनके समाधान को समझने के लिए, और आज के हमारे अपने जीवन में उन्हें लागू करने के लिए उत्तम तरीके से तैयार हो जाएंगे।

धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि

अब क्योंकि हमने प्रेरितों के काम की ऐतिहासिक संरचना और लेखक के बारे में जाँच को कर लिया है, इस लिए अब हम इस अध्याय के तीसरे मुख्य विषय की खोजबीन करने के लिए तैयार हैं, जो कि प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि है।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करते हैं, तो बहुत सारे धर्मवैज्ञानिक प्रश्न हमारे मन में आते हैं। लूका ने कहाँ से इन धर्मवैज्ञानिक दृष्टिकोणों को सीखा? किस तरह उसने यह निर्धारित किया कि इन्हें इस पुस्तक में सम्बोधित किया जाए और इसमें से क्या छोड़ दिया जाए? कौन से व्यापक सिद्धान्तों ने उसके लेखन को निर्देशित किया? ठीक है, इन प्रश्नों के उत्तर लूका की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में पाया जा सकता है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि पर हमारे विचार विमर्श को हम तीन भागों में बाँटेंगे। पहला, हम लूका के धर्मविज्ञान की नींवों को पुराने नियम में से पाएंगे। दूसरा, हम ध्यान देंगे कि कैसे उसका धर्मविज्ञान आने वाले मसीह के द्वारा परमेश्वर के राज्य के बारे में उसकी मान्यताओं से प्रभावित था। और तीसरा, हम यह देखेंगे कि कैसे लूका का सुसमाचार, जो कि लूका के कार्य का प्रथम संस्करण है, प्रेरितों

के काम की पुस्तक को समझने में हमारी सहायता करता है। आइये प्रेरितों के काम की पुस्तक की नीवों को पुराने नियम में से खोजने से आरम्भ करें।

पुराना नियम

पुराने नियम ने लूका के साहित्यिक कार्य को कम से कम दो तरीकों से प्रभावित किया। सबसे पहले स्थान पर, लूका सामान्य तौर पर पुराने नियम के इतिहास के प्रति दृष्टिकोण से बहुत ज्यादा गहराई से प्रभावित था। और दूसरे स्थान पर, वह विशेष तौर पर इस्राएल के इतिहास में इसके प्रयोग को लेकर बहुत ज्यादा गहराई से प्रभावित था। आइये सबसे पहले यह देखें कि कैसे पुराना नियम इतिहास पर सामान्य रूप में लूका के धर्मविज्ञान को सूचित करता है।

इतिहास

17 वीं शताब्दी के प्रसिद्ध मसीह विश्वासी दार्शनिक ब्लैज़ पास्कल ने अपने प्रसिद्ध साहित्यिक कार्य पेन्सिस में उन तीन महान् सत्यों की बात की है जिन्हें मनुष्य के पूरे इतिहास में मान्यता दी गई है। सबसे पहले, वह सृष्टि की महिमा और सौंदर्य के बारे में इंगित करता है वह आश्चर्य जो ब्रह्माण्ड में व्याप्त है क्योंकि परमेश्वर ने सब बातों को अच्छा बनाया है। दूसरा, वह सृष्टि की मूल महिमा और अपने वर्तमान दुख और भ्रष्टाचार के बीच आश्चर्यचकित करनेवाले संघर्ष की बात करता है। और तीसरा, पास्कल, छुटकारे के लिए बोलता है, उस आशा के बारे में जिसमें इस संघर्ष का समाधान हो जाएगा, की वो बात करता है।

पास्कल के चिंतन पुराने नियम के द्वारा संसार के इतिहास का विभाजन सृष्टि की तीन अवस्थाओं, पाप में गिरने और छुटकारे में किए जाने के सामान्तर हैं। और प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका ने आरम्भ की कलीसिया के उन तरीकों के बारे में लिखा जो कि इतिहास के ऊपर इस तीनपक्षीय दृष्टिकोण के चिंतन को प्रकट करता है।

सृष्टि की समयावधि पर ध्यान दें। उत्पत्ति 1 में, परमेश्वर ने अपने स्वर्गीय राज्य के विस्तार के लिए संसार को तैयार किया। उसने ब्रह्माण्ड के रचे जाने का आदेश दिया; अदन में एक स्वर्ग की रचना की; उसके भीतर मानवता को रखा, उस स्वर्ग में मानवता में अपने स्वरूप को रखा और मानवता को आदेश दिया कि वह इसमें फूले फले और इस पृथ्वी को अपने अधीकार में, अदन से आरम्भ करती हुई पूरे संसार के अंत को अपने में कर ले। संक्षेप में, परमेश्वर पृथ्वी पर उसके राज्य के पूर्ण विकास के लिए मंच तैयार करता है।

लूका की पुराने नियम के इस महत्वपूर्ण विचार के बारे में जागरूकता प्रेरितों के काम की पुस्तक के कई स्थानों में स्पष्ट दिखाई देती है। उदाहरण के लिए, 4:24-30 में, पतरस और यूहन्ना ने इस पृथ्वी के ऊपर परमेश्वर की सृष्टि के प्रमाण में उसके राजकीय स्वामित्व के बारे में बोला है। 14:15-17 में, पौलुस और बरनबास ने सृष्टि को जातियों पर परमेश्वर के शासन के लिए आधार के रूप में बात की है। 7:49 में, स्तिफनुस ने यह स्वीकार किया है कि परमेश्वर ने इस संसार को उसकी राजकीय चौकी के रूप में रचा है। पौलुस के प्रेरितों के काम 17:24-27 में दिए गए शब्दों को सुनिये:

जिस परमेश्वर ने पृथ्वी और उस की सब वस्तुओं को बनाया, वह स्वर्ग और पृथ्वी का स्वामी होकर हाथ के बनाए हुए मन्दिरों में नहीं रहता... उस ने एक ही मूल से मनुष्यों की सब जातियाँ सारी पृथ्वी पर रहने के लिये बनाई हैं; और उन के ठहराए हुए समय, और निवास के सिवानों को इसलिये बान्धा है। कि वे परमेश्वर को ढूँढ़ें, कदाचित् उसे टटोलकर पा जाएँ तौभी वह हम में से किसी से दूर नहीं (प्रेरितों के काम 17:24-27)।

इस संदर्भ के अनुसार, पौलुस की सुसमाचार की सेवकाई के लिए पृष्ठभूमि सृष्टि तक पहुँच गई थी। परमेश्वर वह प्रभु है जिसने संसार और जो कुछ इसमें है को बनाया है। उसने इस संसार को आदेश दिया है ताकि मनुष्य उसकी तलाश कर सके, उस तक पहुँच सके और उसको प्राप्त कर सके। पौलुस का सुसमाचार उन उद्देश्यों में से विकसित हुआ जिनमें परमेश्वर ने सृष्टि की रचना की है। अपनी पुस्तक में इन विवरणों को सम्मिलित करके, लूका ने यह इंगित किया है कि सृष्टि का विषय आरम्भ की कलीसिया के लिए उसकी अपनी समझ के लिए महत्वपूर्ण था।

कुछ इसी तरह से, पाप में मानवता की गिरावट के बारे में लूका की जागरूकता भी प्रेरितों के काम की पुस्तक में अग्रभूमि के रूप में आती है। जैसा कि हम जानते हैं कि, उत्पत्ति 3 हमें शिक्षा देता है कि, आदम और हव्वा ने उसके प्रति विद्रोह किया। और इसका प्रभाव जबरदस्त था। पुराने नियम के अनुसार, मानवता की संसार में ऐसी केन्द्रीय भूमिका थी कि उसका पाप में गिरना मृत्यु के अभिशाप को पूरे मानव जाति को अपनी अधीनता में ले आया और सम्पूर्ण सृष्टि भ्रष्ट हो गई।

लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक के कई स्थानों में पाप के दुखों के बारे में लिखा है। हम पाप की गिरावट के संदर्भों को पतरस के संदेशों में 2:38 और 3:19 में पाते हैं, जहाँ प्रेरित यहूदी महासभा के सामने 5:29-32 में अपना बचाव करते हैं, पौलुस ने इफिसियों के अगुवों को 20:18-35 के वाक्यों में, और पौलुस का प्रेरितों के काम 26:20 में राजा अग्रिप्पा के सामने दिये हुए भाषण में लिखा है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक बार बार सृष्टि में जो कुछ है, को दिखाती है – अर्थात् भौतिक संसार, हमारे आर्थिक ढाँचे को, हमारी राजनीतिक तंत्र प्रणाली को, और यहाँ तक कि कलीसिया स्वयं को भी – जो दुख उठाती है, क्योंकि मानवता पाप में गिर कर इससे ग्रस्त है।

आनन्द की बात यह है कि, लूका का प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिया हुआ इतिहास यह इंगित करता है कि उसने पुराने नियम में सृष्टि और पतन के बारे में दी हुई शिक्षाओं को ही स्वीकार किया, बल्कि जो कुछ पुराने नियम ने छुटकारे के बारे में कहा उसे भी स्वीकार किया है। मानवता और सृष्टि बुरी तरह से पाप के कारण भ्रष्ट हो गई थी, लूका जानता था कि परमेश्वर ने उसके संसार को बिना किसी आशा के यों ही नहीं छोड़ दिया है।

पुराना नियम यह शिक्षा देता है कि परमेश्वर उसके लोगों को पाप के श्राप से उस समय से छुटकारा दे रहा और बचा रहा है जबसे इसने इस संसार में प्रवेश किया है। परन्तु इससे भी बढ़कर, पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओं ने यह भी भविष्यद्वक्ता की है कि एक दिन ऐसा आएगा जब पाप और इसके श्राप का पूरी तरह से इस सृष्टि से सफाया कर दिया जाएगा। जब लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा, तो उसने निरन्तर उसके विश्वास को प्रदर्शित किया है कि यह छुटकारा इस संसार में मसीह के उद्धार के कार्य के माध्यम से आ रहा था। यह विषय निरन्तर पूरे प्रेरितों के काम की पुस्तक में दिखाई देता रहता है।

कुछ लोगों के नाम लेने से, जिनमें हम इन छुटकारे के इन विषयों को पाते हैं: पतरस का 2:21-40 में दिए हुए सन्देश में; 5:29-32 में महासभा के आगे प्रेरितों के बचाव में; कुरनेलियुस को 11:14 में स्वर्गदूत के द्वारा कहे गए शब्दों में; पिसिदिया अन्ताकिया में 13:23 में यहूदी आराधनालय में पौलुस के भाषण में; पतरस का यरूशलेम की सभा में 15:7-11 में दी हुई बहस के लिए, और पौलुस और सीलास के फिलिप्पियों के दरोगा को 16:30-31 में कहे गए शब्दों में।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि लूका पुराने नियम के संसार के इतिहास को लेकर बहुत ज्यादा इसकी घनिष्ठता से प्रभावित था, जब उसने इसे लिखा। इसी लिए वह अक्सर पहली शताब्दी के उन क्षणों का विवरण देता है जिनमें संसार का इतिहास सृष्टि से आरम्भ होने, पाप में पतित होने, मसीह के छुटकारे में से हो कर व्यापक रूप में परिलक्षित हुआ है।

अब क्योंकि हमने पुराने नियम के इतिहास के प्रति हमारे प्रकाशन को सामान्य तौर पर देखा लिया है, इस लिए अब हम विशेष रूप से इस्राएल के इतिहास को देखने के लिए तैयार हैं, और जिस तरह से लूका ने इसे प्रेरितों के काम की पुस्तक में इस इतिहास का वर्णन दिया है वह इस विशेष राष्ट्र के इतिहास पर निर्भर करता था।

इस्राएल

ऐसे कई अनगिनत तरीके हैं जिन पर आधारित होकर लूका ने इस्राएल के इतिहास पर भरोसा किया जब वह प्रेरितों के काम की पुस्तक को लिख रहा था। उदाहरण के तौर पर, हम हमारे विचार विमर्श को इस्राएल के इतिहास की तीन घटनाओं तक सीमित रखेंगे: परमेश्वर का अब्राहम को चुनना, मूसा के अधीन भारी संख्या में निर्गमन, और दाऊद के राजवंश की स्थापना। सबसे पहले, आइए यह ध्यान दें कि कैसे परमेश्वर ने अब्राहम को चुनने के द्वारा लूका के इतिहास को सूचित किया।

उत्पत्ति 12:1-3 में वर्णन है कि परमेश्वर ने अब्राहम को विशेष राष्ट्र का पिता होने के लिए चुना। वहाँ हम इन शब्दों को पढ़ते हैं:

यहोवा ने अब्राम से कहा, "अपने देश, और अपनी जन्मभूमि, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा। और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम बड़ा करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। और जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे" (उत्पत्ति 12:1-3)।

इन आयतों के अनुसार, परमेश्वर ने अब्राहम को प्रतिज्ञा किए हुए देश में जाने के लिए दो मुख्य उद्देश्यों के लिए बुलाया।

एक तरफ तो, अब्राहम बड़ी जाति का पिता होगा, प्रसिद्ध होगा, और परमेश्वर से कई तरह की आत्मिक और सांसारिक आशीषों को प्राप्त करेगा। परमेश्वर की आशीषें अब्राहम और उसके बाद उसके वंश के लिए प्रतीकात्मक तौर पर यह प्रदर्शित करती हैं कि परमेश्वर के पास मुक्ति की आशा है, यहाँ तक कि पतित संसार के लिए भी।

परन्तु दूसरी ओर, परमेश्वर की बुलाहट उससे भी बहुत आगे तक गई जिसे अब्राहम और उसके वंशज प्राप्त करेंगे। अब्राहम के माध्यम से, पृथ्वी पर सभी लोग आशीषें पाएँगे। अब्राहम और उसके वंश पृथ्वी के सभी परिवारों के लिए दिव्य आशीर्वाद का एक माध्यम बन जाएँगे।

अब्राहम का परमेश्वर द्वारा चुना जाना प्रेरितों के काम में लूका की सोच के नीचे पड़ा हुआ दिखाई देता है। एक ओर, लूका निरन्तर यह सूचना देता है कि कैसे मसीह में उद्धार की आशीष यहुदियों के लिए आई थी, जो कि अब्राहम का वंश था, जिसने बड़े कुलपति के द्वारा परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को पूरा किया।

परन्तु दूसरी ओर, लूका ने इस पर ध्यान केन्द्रित किया है कि कैसे यहूदी विश्वासी मसीह के सुसमाचार को अन्यजाति तक लेकर आए हैं। समय समय पर प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका ने यह वर्णन किया है कि फिलिप्पुस, पतरस, पौलुस और बरनबास जैसे यहूदी कैसे मुक्ति के सुसमाचार को अन्यजाति के संसार में लेकर गए। यह भी अब्राहम को परमेश्वर द्वारा दी गई प्रतिज्ञा को पूरा करना था।

दूसरे स्थान पर, लूका का प्रेरितों के काम में दृष्टिकोण मूसा और आरम्भ की कलीसिया के बीच के सम्बन्ध की समझ को भी प्रदर्शित करता है। परमेश्वर की ओर से छुड़ानेहारा होने के नाते मूसा ने इस्राएलियों

का नेतृत्व मिस्र की दासता में से किया, उसने इस जाति को परमेश्वर की व्यवस्था को दी, और इसे व्यवस्था के प्रति जवाबदेह माना। और इसी व्यवस्था में, मूसा ने यह भविष्यद्वाणी की कि परमेश्वर एक दिन उसके जैसे एक अन्य भविष्यद्वक्ता को भेजेगा जो कि उसके लोगों को पाप के दासत्व से मुक्ति कराएगा। और जैसे लूका ने इसे प्रेरितों के काम में इंगित किया है, मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता यीशु में आया। स्तिफनुस के शब्दों को जो कि प्रेरितों के काम 7:37-39 में दिए गए हैं सुनिए:

मूसा... ने इस्राएलियों से कहा, "कि परमेश्वर तुम्हारे भाइयों में से तुम्हारे लिये मुझ सा एक भविष्यद्वक्ता उठाएगा। यह वही है, जिस ने जंगल में कलीसिया के बीच उस स्वर्गदूत के साथ सीनै पहाड़ पर उस से बातें की, और हमारे बापदादों के साथ था: उसी को जीवित वचन मिले, कि हम तक पहुँचाए। परन्तु हमारे बापदादों ने उस की मानना न चाहा; बरन उसे हटाकर अपने मन मिस्र की ओर फेरे (प्रेरितों के काम 7:37-39)।

स्तिफनुस के दृष्टिकोण से, यीशु वह भविष्यद्वक्ता था जिसके बारे में मूसा ने भविष्यद्वाणी की थी। इस कारण, यीशु का इन्कार करना मूसा और व्यवस्था का इन्कार करना था, जैसा कि प्राचीन इस्राएल ने किया था। मूसा और व्यवस्था के प्रति सच्चे समर्पण के लिए एक व्यक्ति को मसीह पर भी विश्वास करना अवश्य था।

और इस बात पर ध्यान दें कि कैसे लूका ने पौलुस के शब्दों को यहूदी अगुवों को प्रेरितों के काम 28:23 में सारांशित किया:

तब उन्होंने उसके लिए एक दिन ठहराया, और बहुत से लोग उसके यहाँ इकट्ठे हुए और वह परमेश्वर के राज्य की गवाही देता हुआ और मूसा की व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकों से यीशु के विषय में समझा समझाकर भोर से साँझ तक वर्णन करता रहा (प्रेरितों के काम 28:23)।

पौलुस और बाकी की आरम्भ की कलीसिया के लिए, मूसा और व्यवस्था का स्वीकार किया जाना मसीह में विश्वास की नींव था। और इस विश्वास ने लूका को प्रभावित किया जिसे उसने प्रेरितों के काम की पुस्तक में लिखा है।

और तीसरे स्थान पर, लूका पुराने नियम में वर्णन किये हुए दाऊद के राजवंश से प्रभावित था। पुराने नियम के किसी भी विषय की कल्पना इसकी तुलना में करना मुश्किल होगा कि यह इस्राएल पर शासन करने के लिए स्थायी राजवंश के रूप में दाऊद के घराने की स्थापना लूका के लिए अधिक महत्वपूर्ण था।

जब पुराने नियम में इस्राएल ने एक साम्राज्य के रूप में विकास किया, तो परमेश्वर ने दाऊद के घराने को स्थाई राजवंश के रूप में उसके लोगों को नेतृत्व देने के लिए चुना। परन्तु पुराने नियम ने एक ऐसे दिन का भी पूर्वानुमान लगाया जिसमें दाऊद का घराना परमेश्वर के राज्य को इस्राएल से लेकर पृथ्वी की छोर तक बढ़ाएगा।

जैसा कि हम भजन संहिता 72:8, 17 में पढ़ते हैं:

वह समुद्र से समुद्र तक, और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा...उसका नाम सदा सर्वदा बना रहेगा, जब तक सूर्य बना रहेगा, तब तक उसका नाम नित्य नया होता रहेगा (भजन संहिता 72:8, 17)।

जैसा कि ये आयतें प्रकट करती हैं, यह अब्राहम के वंशज दाऊद के द्वारा होगा कि इस संसार पर आशीर्ष आएंगी। परन्तु दाऊद स्वयं इन्हें नहीं लाएगा। इसकी बजाय, उसके वंशज में से एक पूरी दुनिया पर अपने उदार, शान्तिपूर्ण शासन का विस्तार करने के लिए राजा होगा।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका दाऊद के घराने से पाई जाने वाली आशा से गहराई में आकर्षित है। उसने समझ लिया कि यीशु दाऊद का पुत्र, परमेश्वर के राज्य का राजकीय शासक था, जो कि उसके राज्य को कलीसिया के माध्यम से यरूशलेम से लेकर पृथ्वी के छोर तक विस्तार कर रहा था।

उदाहरण के लिए, याकूब के यरूशलेम की सभा में कहे हुए शब्दों को सुनिए, जो हमें प्रेरितों के काम की पुस्तक 15:14-18 में मिलते हैं:

परमेश्वर ने पहिले पहिल अन्यायियों पर कैसी कृपादृष्टि की, कि उन में से अपने नाम के लिये एक लोग बना ले। और इस से भविष्यद्वक्ताओं की बातें मिलती हैं, जैसा लिखा है, कि "इस के बाद मैं फिर आकर दाऊद का गिरा हुआ डेरा उठाऊंगा, और उसके खंडहरों को फिर बनाऊंगा, और उसे खड़ा करूंगा। इसलिये कि शेष मनुष्य, अर्थात् सब अन्यायि जो मेरे नाम के कहलाते हैं, प्रभु को ढूँढ़ें।" यह वही प्रभु कहता है जो जगत की उत्पत्ति से इन बातों का समाचार देता आया है (प्रेरितों के काम 15:14-18)।

यहाँ पर याकूब आमोस 9:11-12 का उद्धृत करता है, जहाँ पर आमोस ने यह भविष्यद्वक्ता की है कि परमेश्वर दाऊद के राजवंश को पुनः स्थापित करेगा और उसके राज्य को अन्यायियों के राष्ट्रों तक विस्तार देगा। जैसा कि यहाँ पर इंगित किया गया है कि, याकूब ने यह विश्वास किया कि अन्यायियों में सुसमाचार की सफलता पुराने नियम की आशाओं की पूर्णता थी।

लूका चाहता था कि उसके पाठक यह समझ लें कि यीशु अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं का वंशज था, मूसा के जैसा भविष्यद्वक्ता और दाऊदवंशीय अन्तिम राजा था। यीशु उसके सिंहासन पर विराजमान हुआ और सुसमाचार के द्वारा, और कलीसिया के विकास के द्वारा इस संसार पर विजय को प्राप्त कर रहा था, उसके मुक्ति के राज्य को यरूशलेम से लेकर पृथ्वी के अन्तिम छोर तर फैला रहा था, जैसा कि पुराने नियम में पहले से ही भविष्यद्वक्ता कर दी गई थी।

परमेश्वर का राज्य

लूका की पुराने नियम के ऊपर निर्भरता को देख लेने के बाद, हम अब यह देखने के लिए तैयार हैं कि कैसे परमेश्वर का मसीही राज्य प्रेरितों के काम की पुस्तक की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि में योगदान देता है।

परमेश्वर के राज्य के ऊपर हमारे विचार विमर्श को हम तीन भागों में विभाजित करेंगे। सबसे पहले, हम यहूदी मसीही धर्मविज्ञान पर ध्यान देंगे जो कि पहली शताब्दी में प्रचलित था। और दूसरा, हम यहूदी बपतिस्मा देने वाले की धर्मविज्ञान पर ध्यान देंगे। और तीसरा, हम संक्षेप में इन दृष्टिकोणों को मसीही विश्वासी की मसीही धर्मविज्ञान से तुलना करेंगे जिसे लूका ने समर्थन दिया है। आइये यहूदी धर्मविज्ञान के दृष्टिकोण से आरम्भ करें।

यहूदी धर्मविज्ञान

पाँचवीं शताब्दी ई. पूर्व., में पुराने नियम की पुस्तकों के लिखे जाने के बाद, इस्राएल ने आत्मिक अन्धकार के युग में प्रवेश किया। हजारों वर्षों तक, इस्राएलियों की एक बड़ी संख्या प्रतिज्ञा की हुई भूमि से बाहर रह कर जीवन यापन किया, और वे जो इस भूमि पर बचे हुए रह गए थे उन्होंने अन्यजातियों के शासकों से बहुत ज्यादा अत्याचार का सामना किया। सबसे पहले, बाबुल, फिर मादी और फारसी, और फिर यूनानी और अन्त में रोमियों से। परिणामस्वरूप दुखों के लम्बे इतिहास के कारण, परमेश्वर के द्वारा छुटकारा देने वाले मसीह के प्रति आशा यहूदी धर्मविज्ञान में एक सबसे ज्यादा प्रबल होती विचारधारा बन गई।

यहूदियों की मसीह के बारे में आशा ने अलग अलग दिशाओं को ले लिया। उदाहरण के लिए, जलोती अर्थात् उग्रपंथियों ने विश्वास किया कि परमेश्वर चाहते थे कि वे इस्राएलियों के द्वारा रोमी अधिकारियों के विरुद्ध विद्रोह को बढ़ाने के द्वारा मसीह के आगमन को तेज कर सकते थे। विभिन्न रहस्योद्घाटन विचारधारा वाले समूहों ने यह विश्वास किया कि परमेश्वर अलौलिक तरीके से उसके शत्रुओं को नाश करने के लिए हस्तक्षेप करेगा और विजेताओं के रूप में अपने लोगों को स्थापित करेगा। वहाँ इस्राएल में ऐसे कानूनविद् थे, जो कि लोकप्रिय फरीसियों और सद्कियों के रूप में थे, वे यह विश्वास करते थे कि परमेश्वर तब तक हस्तक्षेप नहीं करेगा जब तक इस्राएल व्यवस्था के प्रति पूर्ण विश्वासयोग्य नहीं हो जाता है। लूका इन सभी विभिन्न बिंदुओं से अच्छी तरह से परिचित था। क्योंकि उसने बहुत सारे वर्ष पलिशतीन में और यहूदी धर्मशास्त्रियों के बीच में बिताए थे। प्रेरितों के काम की पुस्तक में विभिन्न स्थानों पर लूका यह उल्लेख करता है कि कई यहूदियों ने मसीह विश्वासियों के मसीही राज्य को स्वीकार करने से इन्कार कर दिया था।

यद्यपि मसीह के प्रति यहूदियों की कई तरह की आशा थी, लूका ने यह देखा कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले की सेवकाई के द्वारा यहूदी धर्मविज्ञान में एक विशेष महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है।

यूहन्ना बपतिस्मादाता

दोनों अर्थात् लूका का सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक यह इंगित करते हैं कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने सच्चे पश्चाताप के लिए बुलाहट दी और शुभ सन्देश की घोषणा की कि मसीह परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर लाने वाला था। और इससे भी बढ़कर, यूहन्ना ने सही तरह से यीशु की पहचान मसीह के रूप में की। सुनिश्च यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के शब्दों को लूका 3:16-17 में

तो यूहन्ना ने उन सब से कहा, "मैं तो तुम्हें पानी से बपतिस्मा देता हूँ, परन्तु वह आनेवाला है जो मुझ से शक्तिमान है; मैं तो इस योग्य भी नहीं कि उसके जूतों का बन्ध खोलू सकूँ; वह तुम्हें पवित्र आत्मा और आग से बपतिस्मा देगा। उसका सूप उसके हाथ में है; और वह अपना खलिहान अच्छी तरह से साफ करेगा; परन्तु गेहूँ को अपने खत्ते में इकट्ठा करेगा; परन्तु भूसी को उस आग में जो बुझने की नहीं जला देगा" (लूका 3:16-17)।

यहाँ यूहन्ना ठीक ही मसीह के बारे में घोषणा करता है कि मसीह पवित्र आत्मा की महान् आशीषों और शुद्धता को लाएगा, जिसमें न्याय भी सम्मिलित है। परन्तु वह इस गलत धारणा के अधीन था कि मसीह इस कार्य को एक ही बार में कर देगा।

यूहन्ना भविष्य के लिए नहीं देखता कि मसीह कई चरणों में इस संसार में उद्धार और न्याय को लाएगा। बाद में, यूहन्ना इस तथ्य को लेकर आश्चर्यचकित रह गया कि यीशु ने अभी तक कुछ भी नहीं किया था

जिसके बारे में यहूदी धर्मशास्त्रियों ने आशा की थी जिसे मसीह करेगा। यूहन्ना इतना ज्यादा परेशान हो गया कि उसने यीशु से पूछने के लिए दूतों को भेजा कि वह वास्तव में मसीह था भी या नहीं।

सुनिए जिस तरह से लूका ने उनके प्रश्न का विवरण और यीशु के प्रत्युत्तर को लूका 7:20-23 में दिया है:

उन्होंने उसके पास आकर कहा, "यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने हमें तेरे पास पूछने के लिए भेजा कि, 'क्या आनेवाला तू ही है, या हम किसी दूसरे की बात देखें'...और उसने उनसे कहा कि, 'जाकर यूहन्ना से कह दो कि अन्धे देखते हैं, लंगड़े चलते फिरते हैं, कोढ़ी शुद्ध किए जाते हैं, बहिरे सुनते हैं, मुरदे जिलाए जाते हैं, और कंगालों को सुसमाचार सुनाया जाता है। धन्य है वह जो मेरे विषय में ठोकर न खाए'" (लूका 7:20-23)।

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को दिए अपने उत्तर में, यीशु ने यशायाह की पुस्तक में मुक्तिदाता सम्बन्धी भविष्यवाणी की एक बड़ी संख्या को उद्धृत किया। उसने ऐसा इस लिए किया क्योंकि वह पुराने नियम की मसीह सम्बन्धी भविष्यवाणियों की विभिन्न तरह की आशाओं को पूरी करने की प्रक्रिया में लगा हुआ था, यद्यपि उसने उन्हें अभी तक पूरा नहीं किया था। यीशु ने उन्हें उत्साहित किया कि यूहन्ना अपने विश्वास में किसी भी तरह से न गिरे क्योंकि इस तरह से मसीह का कार्य प्रगट हो रहा था।

थोड़े शब्दों में, यीशु का मिशन जैसी आशा की गई थी उससे बहुत ज्यादा भिन्न था। यहूदियों की मसीह के प्रति आशा अतिशीघ्र एक पार्थिव राजनैतिक राज्य की स्थापना मसीह के शासन के अधीन करने की थी, जो कि शताब्दियों पहले दाऊद के द्वारा शासित किए हुए राज्य के सामान्तर हों। परन्तु यीशु ने इस तरह के राज्य की स्थापना करने की कोई कोशिश उसकी पार्थिव सेवकाई के मध्य में नहीं की।

यहूदियों के मसीह के प्रति इस तरह की धर्मवैज्ञानिक समझ के साथ और यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के दृष्टिकोणों को अपने ध्यान में रखते हुए, हम अब मसीह और परमेश्वर के राज्य के प्रति आरम्भिक मसीह धर्मविज्ञान को देखने के लिए मुड़ने के लिए तैयार हैं।

मसीही धर्मविज्ञान

लूका के साहित्य में, जैसा कि बाकी के नए नियम के साहित्य में, मसीही विश्वास का मसीह के प्रति धर्मविज्ञान मसीही सुसमाचार या शुभ सन्देश से निकटता के साथ सम्बन्धित है। हम नए नियम के सन्देश को कुछ इस तरह से सारांशित कर सकते हैं:

सुसमाचार यह घोषणा करता है कि परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी पर यीशु जो मसीह है के व्यक्तित्व और कार्य के द्वारा आ पहुँचा है, और यह अपने बड़े समापन की ओर जैसे जैसे परमेश्वर उन लोगों को मुक्ति प्रदान कर रहा है जो कि इसे यीशु जो मसीह से प्राप्त करते और उसमें भरोसा रखते हैं, बढ़ रहा है।

आप ध्यान देंगे कि सुसमाचार का सन्देश दो आवश्यक विचारों को स्पर्श करता है। एक ओर तो, हम पाते हैं कि जिसे हम मसीही सुसमाचार का विषयपरक पहलू कह सकते हैं। परमेश्वर का राज्य इस पृथ्वी में यीशु के कार्य और व्यक्तित्व के द्वारा आता है। लूका ने विश्वास किया कि यही मसीह था, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के अन्तिम चरण को आरम्भ कर दिया है, और यह कि एक दिन वह जो कुछ उसने आरम्भ किया है उसे समाप्त करने के लिए भी पुनः आएगा।

और दूसरी ओर, नए नियम के सुसमाचार के सन्देश के बहुत ज्यादा व्यक्तिपरक पहलू भी हैं। इसने घोषणा की कि परमेश्वर के राज्य का अन्तिम चरण इसके समापन की ओर बढ़ता चला जा रहा है जैसे जैसे परमेश्वर उन लोगों को उद्धार दे रहा है जो कि इसे यीशु जो मसीह है में भरोसा करते और प्राप्त करते हैं। परमेश्वर का राज्य इस संसार को प्रेरित करता है जब सुसमाचार उन लोगों के हृदयों को स्पर्श करता है जो इसमें विश्वास रखते हैं, और उनको उस उद्धार में ले आता है जिसे यीशु ने स्थापित किया है।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में, लूका अपना ध्यान सुसमाचार के इन दोनों पहलुओं की ओर आकर्षित करता है। विषयपरक पहलू की ओर, उसका जोर परमेश्वर के मसीह में किए गए महान् कार्य उद्धार की वास्तविकता के ऊपर है। उसने विवरण दिया है कि कलीसिया की घोषणा यह है कि यीशु उसके लोगों के लिए उनके पापों के लिए मर गया, कि वह मृतकों में से जी उठा है, कि वह पिता परमेश्वर के दाहिने हाथ विराजमान होकर राज्य करता है, और यह कि वह अपनी महिमा में पुनः वापस आएगा।

उदाहरण के लिए, सुनिए लूका ने पतरस के पिन्तेकुस्त के दिन दिए हुए सन्देश में प्रेरितों के काम 2:22-24 में क्या विवरण दिया है:

यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की ओर से होने का प्रमाण उन सामर्थ्य के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है... तुम ने अधर्मियों के हाथ से उसे क्रूस पर चढ़वाकर मार डाला। परन्तु उसी को परमेश्वर ने मृत्यु के बन्धनों से छुड़ाकर जिलाया: क्योंकि यह अनहोना था कि वह उसके वश में रहता (प्रेरितों के काम 2:22-24)।

ध्यान दें पतरस के सुसमाचार की घोषणा में मसीह के जीवन, मृत्यु और जी उठने के विषयपरक तथ्य सम्मिलित हैं।

परन्तु लूका सुसमाचार के व्यक्तिपरक विषय की ओर भी और ज्यादा ध्यान आकर्षित करता है। काफी सारे अवसरों पर उसका जोर लोगों की महत्वपूर्णता के ऊपर है जो कि मसीह की सच्चाई को व्यक्तिगत तौर पर स्वीकार करने की है ताकि उनके जीवनो में परिवर्तन आ जाए।

उदाहरण के लिए, लूका ने पतरस के पिन्तेकुस्त के दिन दिए हुए सन्देश में उसके भाषण में निम्न शब्दों को सम्मिलित किया है जो कि प्रेरितों के काम 2:37-38 में सम्मिलित हैं।

तब सुननेवालों के हृदय छिद गए... "कि हे भाइयो, हम क्या करें?" पतरस ने उन से कहा, "मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने अपने पापों की क्षमा के लिये यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे।" (प्रेरितों के काम 2:37-38 हिन्दी का पुराना अनुवाद)।

मसीह का सुसमाचार उन लोगों के हृदयों को छेद देता है जो कि उसे सुनते हैं। यह न केवल उन तथ्यों को स्वीकार करता है, परन्तु हृदयों का एक अहसास है, उद्धारकर्ता की जीवन-परिवर्तन की हार्दिक चाहत है।

जैसा कि कहा गया है कि, पहली-शताब्दी में, यहूदी धर्मविज्ञान में यह विश्वास किया जाता था कि मसीह एक राजनैतिक राज्य को एकदम ही स्थापित कर देगा। परन्तु यीशु और उसके प्रेरितों ने यह सिखाया कि मसीह का राज्य धीरे धीरे कलीसिया के द्वारा और लोगों के व्यक्तिगत परिवर्तन के द्वारा विकास करेगा।

यह एक कारण भी है कि क्यों लूका ने इतना ज्यादा ध्यान अविश्वासियों को मन परिवर्तन के ऊपर सुसमाचार की घोषणा के द्वारा केन्द्रित किया है। वह जानता था कि यही वह माध्यम है जिसके द्वारा परमेश्वर का मसीही राज्य पूरे संसार में फैल जाएगा।

पुराने नियम की व्यापक रूपरेखा के दर्शन को मन में रखने के साथ, हमें प्रेरितों के काम की धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि के तीसरे पहलू पर ध्यान देना चाहिए: जो कि लूका के सुसमाचार में इसकी नींव के होने से है।

लूका का सुसमाचार

जैसा कि हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि यह उन दो संस्करणों में दूसरा है जिसे लूका ने थियुफिलुस को लिखा। लूका ने सदैव यह सोचा कि इन पुस्तकों को एक साथ इकट्ठा पढ़ा जाना चाहिए। उसका सुसमाचार कहानी का पहला हिस्सा है और प्रेरितों के काम की पुस्तक उसकी कहानी का दूसरा हिस्सा है। इस कारण, प्रेरितों के काम की पुस्तक को सही तरीके से पढ़ने के लिए, हमें चाहिए कि हम यह समझें कि कहानी कैसे निरन्तर चलती रहती है जो कि सुसमाचार में आरम्भ हुई थी।

कई ऐसे तरीके हैं जिनमें लूका ने सुसमाचार को हमारी समझ के लिए तैयार किया है कि हम प्रेरितों के काम के सन्देशों को समझ सकें। परन्तु हमारे उद्देश्यों के लिए हम हमारे ध्यान को परमेश्वर के राज्य के विषय के ऊपर ध्यान केन्द्रित करेंगे जो कि दोनों संस्करणों में चलता है। लूका के सुसमाचार में, यीशु ने परमेश्वर के राज्य के लिए नमूने और लक्ष्य की स्थापना की और अपने काम को जारी रखने के लिए उसके प्रेरितों को तैयार किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक में, यीशु स्वर्ग में रोहित हो गया है और उसके प्रेरितों को पीछे छोड़ गया है, जिन्हें पवित्र आत्मा के द्वारा सामर्थ्य दी गई है, जो कि सुसमाचार के द्वारा उसके राज्य को विस्तार करने के लिए दायित्वपूर्ण हैं।

हम उन दो तरीकों पर ध्यान देंगे जिन्हें लूका के सुसमाचार ने प्रेरितों के लिए प्रेरितों के काम की पुस्तक में राज्य-के निर्माण के लिए तैयार किया है। सबसे पहला, हम यीशु की ओर देखेंगे जो कि राज्य को लेकर आया। और दूसरा, हम प्रेरितों की भूमिका को यीशु के द्वारा स्वर्गारोहण होने के बाद निरन्तर उसके राज्य के विस्तार में देखेंगे। आइये हम यीशु के साथ आरम्भ करें जो वह है जो कि परमेश्वर के राज्य को लाता है।

यीशु

सम्पूर्ण सुसमाचार में, लूका यीशु को एक भविष्यद्वक्ता के रूप में चित्रित करता है जो कि परमेश्वर के राज्य के आने के बारे में घोषणा कर रहा और एक ऐसे राजा के बारे में जो कि राज्य को अपनी सामर्थ्य से उसके सिंहासन से नीचे ला रहा है। यीशु ने स्वयं दोनों अर्थात् इन विचारों को कई स्थानों में बोला है। परन्तु उदाहरण के लिए, हम केवल दो बार ही इन पर ध्यान देंगे कि वह इसका उल्लेख उसकी सार्वजनिक सेवकाई में करता है।

एक तरफ, लूका 4:43 में, यीशु ने इन शब्दों को उसकी सार्वजनिक सेवकाई के आरम्भ में बोला

मुझे परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाना अवश्य है... क्योंकि मैं इसी लिए भेजा गया हूँ (लूका 4:43)।

दूसरी तरफ, उसकी सार्वजनिक सेवकाई के अन्त में, उसके द्वारा यरूशलेम में विजयी प्रवेश के ठीक पहले जब उसके राजा के रूप में ऊँचे पर उठाया गया था, यीशु ने लूका 19:12-27 में दस मुहरों का दृष्टान्त दिया था। इस दृष्टान्त में, उसने व्याख्या दी कि परमेश्वर का राज्य धीरे धीरे आएगा। उन दिनों में बहुत से यहूदी एक ऐसे राज्य के लिए विश्वास करते थे जो कि अपनी पूर्णता में एकदम से आ जाएगा। परन्तु यीशु ने शिक्षा दी कि वह ऐसे राज्य को ला रहा था जो कि धीरे धीरे और विभिन्न चरणों में आएगा। यीशु ने राज्य का आरम्भ कर दिया था, परन्तु वह कुछ देर के लिए मुकुटधारी राजा बनने के लिए दूर जा रहा था, और वह उसके राज्य को तब तक पूरा नहीं करेगा जब तक वह पुनः वापस नहीं आ जाता है।

सुनिए लूका 19:11-12 में जिस तरह से दस मुहरों का दृष्टान्त आरम्भ होता है:

उस ने एक दृष्टान्त कहा, इसलिए कि वह यरूशलेम के निकट था, और वे समझते थे कि परमेश्वर का राज्य अभी प्रगट होने वाला है। अतः उसने कहा: "एक धनी मनुष्य दूर देश को चला ताकि राजपद पाकर लौट आए।" (लूका 19:11-12)।

ध्यान दीजिए यहाँ पर क्या हुआ। यीशु यरूशलेम में प्रवेश करने वाला था और उसके राजा होने की घोषणा की जाने वाली थी, परन्तु वह बिल्कुल भी नहीं चाहता कि लोग यह अनुमान लगाएँ कि वह स्वयं को उस समय एक सांसारिक शासक के रूप में स्थापित करेगा। इसके बजाय, वह अपने शासन को प्राप्त करने के लिए, एक लम्बे समय के लिए रवाना हो जाएगा, और भविष्य में अपने सांसारिक राज्य पर शासन करने के लिए पुनः आएगा।

और वास्तव में क्या हुआ है। यरूशलेम में, यीशु को गिरफ्तार किया गया और क्रूस पर चढ़ाया गया। फिर वह मरे हुएों में से पुनः जीवित हो उठा और स्वर्ग पर चढ़ गया, और इस स्थान पर उसने पिता से उसके शासन को प्राप्त किया। और उसे अभी भी अपने राज्य को पूरा करने के लिए पुनः वापस आना है।

लूका का सुसमाचार यीशु को ऐसे स्थापित करता है कि वही राज्य को लाने वाला है, की इस समझ के साथ, हम सुसमाचार में स्थापित दूसरे विषय पर ध्यान देने की ओर मुड़ने के लिए तैयार हैं: जो कि सुसमाचार के द्वारा राज्य को प्रेरितों द्वारा आगे बढ़ाने में उनकी भूमिका को अदा करने के बारे में है।

प्रेरित

जिस दिन यीशु को क्रूसित किया गया, उससे पहली रात में, उसने प्रेरितों को उसके कार्य को राज्य में आगे बढ़ाने के लिए निर्देश दिया।

सुनिए लूका 22:29-30 में उसके द्वारा कहे हुए शब्दों को:

और जैसे मेरे पिता ने मेरे लिए एक राज्य ठहराया है, वैसे ही मैं भी तुम्हारे लिए एक राज्य ठहराता हूँ, ताकि तुम मेरे राज्य में मेरी मेज पर खाओ-पिओ, वरन् सिंहासनों पर बैठकर इस्राएल के बारह गोत्रों का न्याय करो (लूका 22:29-30)।

यीशु ने उसके प्रेरितों को उसके राज्य में नेतृत्व देने वाले और न्यायी करके ठहराया। उनका कार्य था कि, वह पवित्र आत्मा पर निर्भर रहते हुए, जिस कार्य को वह छोड़ कर गया था, उसे राज्य के सुसमाचार के प्रचार की घोषणा करने के द्वारा और इस संसार में राज्य को भर देने के द्वारा आगे बढ़ाएँ।

इस कारण, हम देखते हैं कि लूका का सुसमाचार यह स्थापित करता है कि राज्य की उदघोषणा करना यीशु का प्राथमिक कार्य था और उसने उसके प्रेरितों को अधिकृत किया कि वे उसके स्वर्ग में रोहित हो जाने के बाद उसके कार्य को निरन्तर आगे बढ़ाते रहें।

और प्रेरितों के काम की पुस्तक ठीक वहाँ से आरम्भ करती है जहाँ पर लूका का सुसमाचार अन्त करता है। यह यीशु मरे हुएों में से पुनरुत्थान और उसके द्वारा स्वर्ग में चढ़ने, प्रेरितों को शिक्षा देने में समय को बिताने की व्याख्या करती हुई आरम्भ होती है।

सुनिए लूका के प्रेरितों के काम 1:3-8 में दिए हुए वर्णन को:

और उस ने दुःख उठाने के बाद बहुत से पक्के प्रमाणों से अपने आप को उन्हें जीवित दिखाया, और चालीस दिन तक वह उन्हें दिखाई देता रहा: और परमेश्वर के राज्य की बातें करता रहा... और उन्हें आज्ञा दी: "कि यरूशलेम को न छोड़ो, परन्तु पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो... परन्तु थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्रात्मा से बपतिस्मा पाओगे।" सो उन्होंने ने इकट्ठे होकर उस से पूछा: "कि हे प्रभु, क्या तू इसी समय इस्राएल को राज्य फेर देगा? उस ने उन से कहा; उन समयों या कालों को जानना, जिन को पिता ने अपने ही अधिकार में रखा है, तुम्हारा काम नहीं। परन्तु जब पवित्र आत्मा तुम पर आएगा तब तुम सामर्थ्य पाओगे; और यरूशलेम और सारे यहूदिया और सामरिया में, और पृथ्वी की छोर तक मेरे गवाह होंगे। (प्रेरितों के काम 1:3-8)

एक बार फिर से, यीशु ने उसके अनुयायियों को उत्साहित किया कि वे राज्य को एकदम पूर्ण होने की ओर न देखें। इसके बजाय, उसने यह पुष्टि की कि प्रेरित संसार भर में सुसमाचार का प्रचार करने के अपने कार्य के लिए दायित्वपूर्ण होंगे।

और यही तो ठीक प्रेरितों ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में किया। उन्होंने परमेश्वर के राज्य के वर्तमान ढाँचे में कलीसिया की स्थापना की। और वे राज्य के सुसमाचार को नए स्थानों और लोगों के पास तक लाते हुए, राज्य को यरूशलेम से लेकर यहूदिया से लेकर सामरिया और पृथ्वी के अन्तिम छोर तक फैलाते चले गए।

सुनिए लूका प्रेरितों के काम की पुस्तक को प्रेरितों के काम 28:30-31 में कैसे सारांशित करता है:

वह पूरे दो वर्ष... अपने भाड़े के घर में रहा और जो उसके पास आते थे, उन सब से मिलता रहा और बिना रोक टोक बहुत निडर होकर परमेश्वर के राज्य का प्रचार करता और प्रभु यीशु की बातें सिखाता रहा (प्रेरितों के काम 28:30-31)।

ध्यान दें बस सामान्य तौर पर यह कहने की बजाए कि पौलुस ने "सुसमाचार" का प्रचार किया, लूका कहता है कि पौलुस ने परमेश्वर के राज्य का प्रचार किया। प्रेरितों के काम की पुस्तक बिल्कुल वैसी ही अन्त होती है जैसे इसका आरम्भ, प्रेरितों की भूमिका पर जोर देते हुए होता है जो ऐसे लोग हैं जो परमेश्वर के राज्य को इस पृथ्वी पर विस्तार, उनकी घोषणा के द्वारा कर रहे हैं।

जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक को पढ़ते हैं, तो हमें सदैव यह स्मरण रखना चाहिए कि लूका ने पुराने नियम की पृष्ठभूमि में और मसीह में परमेश्वर के राज्य की पहली शताब्दी की मान्यताओं में होकर इसे लिखा। और हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि प्रेरितों के काम की पुस्तक लूका के सुसमाचार का अनुसरण

यह विवरण देते हुए करती है कि मसीह की सेवकाई के द्वारा आरम्भ किया हुआ राज्य का कार्य जब वे पवित्र आत्मा पर निर्भर रहे तो कैसे प्रेरितों और आरम्भ की कलीसिया के द्वारा जारी रहा।

सारांश

इस अध्याय में, हमने प्रेरितों के काम की पुस्तक के लेखक के बारे में जाँच की; हमने इसकी ऐतिहासिक समयावधि का विवरण दिया; और हमने इसकी धर्मवैज्ञानिक पृष्ठभूमि की खोजबीन की। इन विवरणों को ध्यान में रखते हुए जब हम प्रेरितों के काम की पुस्तक का अध्ययन करते हैं तो हम इसके वास्तविक अर्थ को पाते हैं, और इन्हें सही तरीके से हमारे जीवनों में लागू करते हैं।

जबकि हम इस श्रृंखला को जारी रखते हैं, तो हम यह देखेंगे कि कैसे प्रेरितों के काम की पृष्ठभूमि इस सुन्दर पुस्तक में कई खिड़कियों को खोल देती है। हम जान जाएंगे कि कैसे लूका का आत्म प्रेरित आरम्भ की कलीसिया का विवरण थियुफिलुस और आरम्भ की कलीसिया के विश्वासियों को मसीह के लिए विश्वासयोग्य तरीके से सेवकाई करने के लिए नेतृत्व प्रदान करता है। और हम देखेंगे कि कैसे प्रेरितों के काम की पुस्तक आधुनिक कलीसिया को महत्वपूर्ण मार्गदर्शन प्रदान करता है जब हम निरन्तर हमारे अपने संसार में राज्य का सुसमाचार प्रचार करते हैं।